sandhya

जन्मतिथिः	11 March 1980 Tuesday
जन्म समयः	06:30 AM
जन्म स्थानः	Mumbai (Maharashtra), India
Latitude:	18.58N Longitude: 72.50E
अयनांशः	एन सी लाहिरी 23:34:47
स्थानीय मानक समयः	05:51:20
साम्पातिक कालः	17:6:43
स्थानीय समय संशोधनः	-38:40
तिर्यकः	23.4

अवकहड़ा चक्र

लग्न	कुम्भ
लग्नपति	शनि
राशी	धनु
राशी स्वामी	गुरु
नक्षत्र	मूला
नक्षत्र स्वामी	केतु
चरण	3
तिथि	नवमी कृष्ण
पाया	स्वर्ण
सूर्य सिद्धांत योग	व्यातिपात
करण	गरिज
वर्ण	क्षत्रिय
तत्व	वायु
वश्य	चतुष्पद
योनि	स्वान(पु.)
गण	राक्षस
नाड़ी	आदि
नाड़ी पद	अन्त
विहग	करन्द
प्रथम अक्षर	य, यो, भा, भी
सूर्य राशि	मीन
डेकानेट	3

घात चक्र

राशी	कन्या
माह	श्रावण
तिथि	3,8,13
दिवस	शुक्रवार
नक्षत्र	भरनी
प्रहर	1
लग्न	धनु
योग	वैधृति
करण	तैतिल

शुभ अशुभ विचार

सौभाग्य अंक	2
शुभांक	1,3,7,9
अशुभ अंक	5,8
शुभ वर्ष	11,20,29,38,47
शुभ दिन	शुक्रवार, शनिवार, मंगलवार
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
अशुभ ग्रह	गुरु, रवि
मित्र राशि	वृष मिथुन तुला
शुभ लग्न	वृष, सिंह, तुला, धनु
शुभ धातु	लोहा
शुभ रत्न	नीलम
शुभ समय	सायंकाल
शुभ दिशा	पश्चिम

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशी	डिग्री	नक्षत्र	नक्षत्राधिप	पद	दिशा	अवस्था
लग्न	कुम्भ	19:28:10	शतभिषा	राहु	4		––
रवि	कुम्भ	27:01:56	पूर्व भाद्रपद	गुरु	3	मार्गी	––
बुध	कुम्भ	17:34:34	शतभिषा	राहु	4	वक्री	––
शुक्र	मेष	11:11:21	अश्विनी	केतु	4	मार्गी	––
मंगल	सिंह	06:41:02	मघा	केतु	3	वक्री	––
गुरु	सिंह	09:45:18	मघा	केतु	3	वक्री	––
शनि	कन्या	00:18:37	उत्तरा	रवि	2	वक्री	––
चन्द्र	धनु	09:42:22	मूला	केतु	3	मार्गी	––
राहु	सिंह	04:36:26	मघा	केतु	2	वक्री	––
केतु	कुम्भ	04:36:26	धनिष्ठा	मंगल	4	वक्री	––
इन्द्र	वृश्चिक	01:56:18	विशाखा	गुरु	4	वक्री	––
वरुण	वृश्चिक	29:02:37	ज्येष्ठा	बुध	4	मार्गी	––
रुद्र	कन्या	27:36:48	चित्रा	मंगल	2	वक्री	––

लग्न कुन्डली

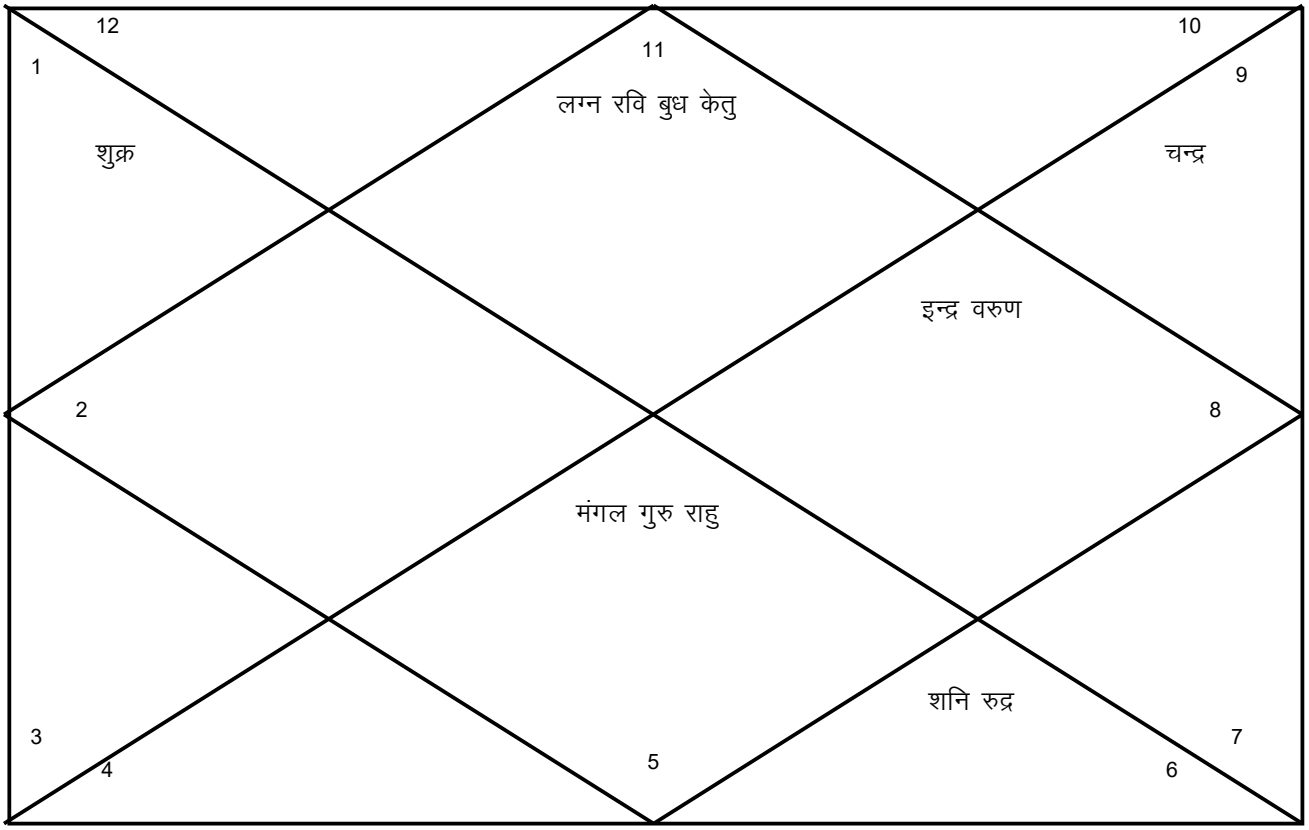

लग्न

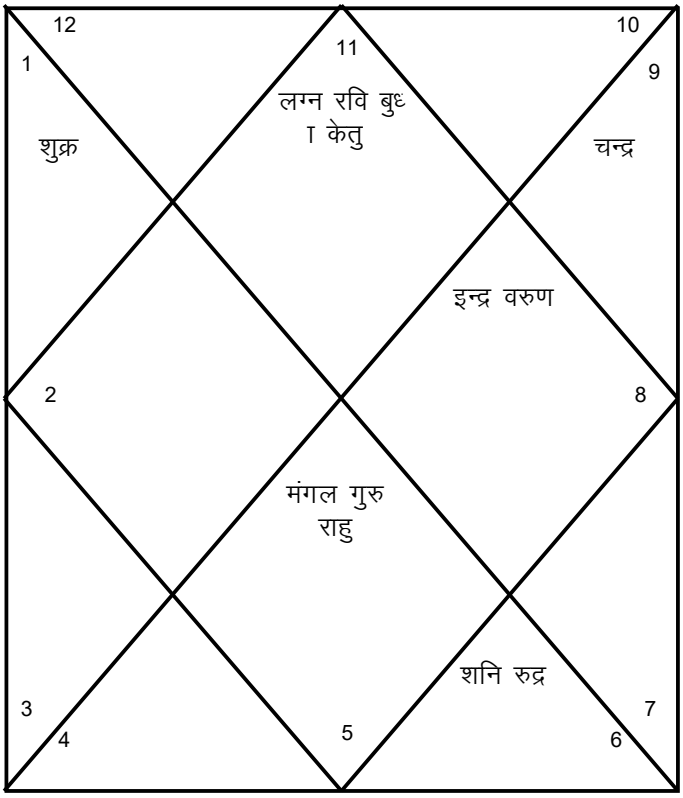

होरा

धनसम्पदा

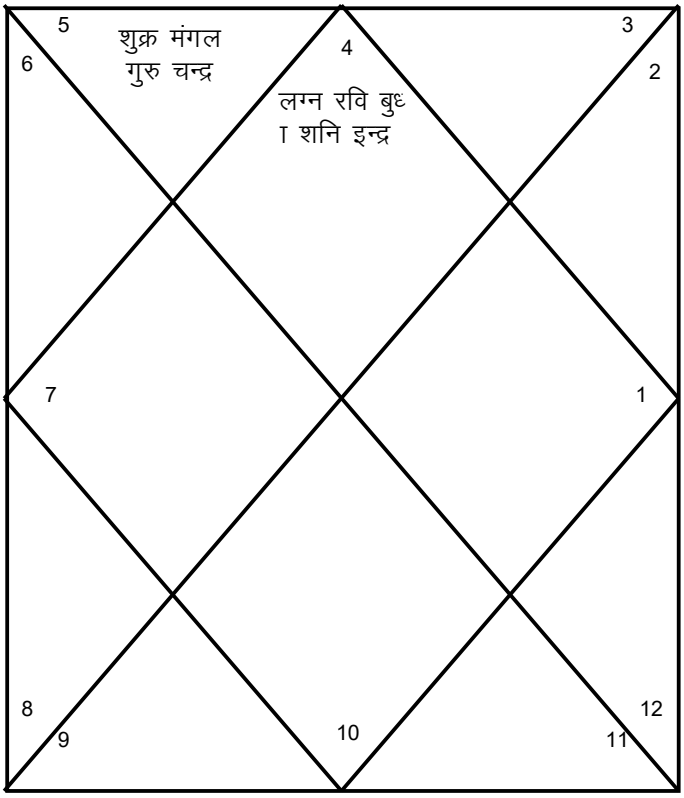

द्रेक्कान

सहोदर

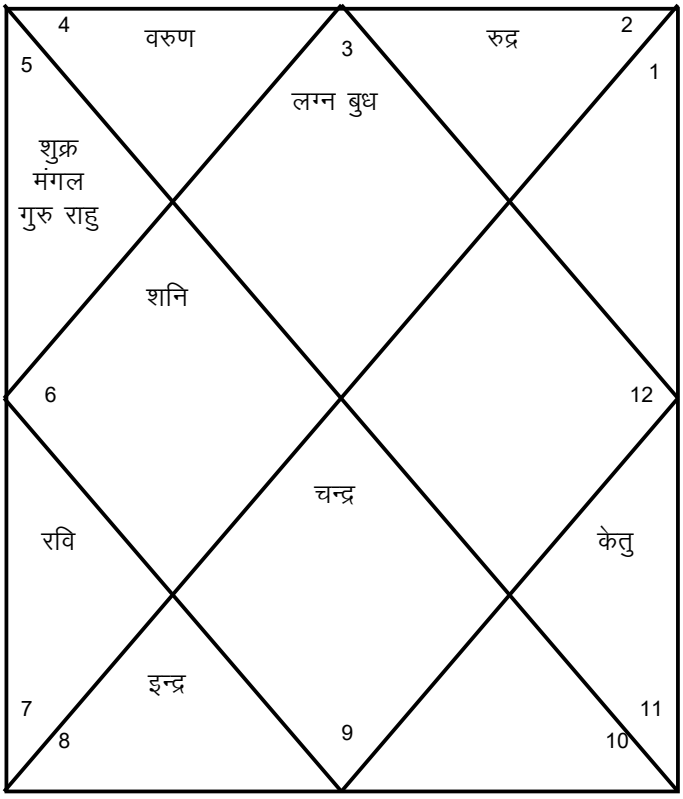

चतुर्थांश

भाग्य

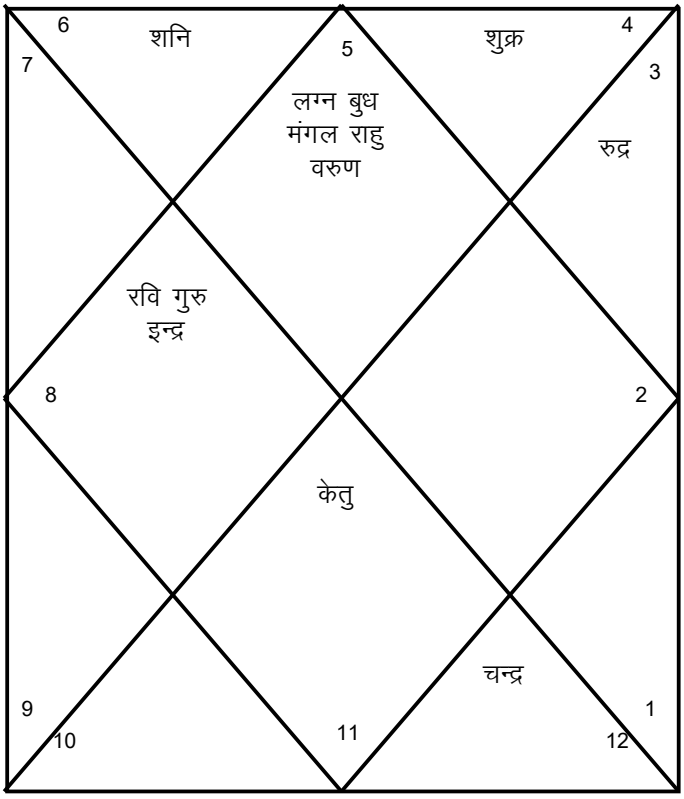

सप्तमांश — सन्तति

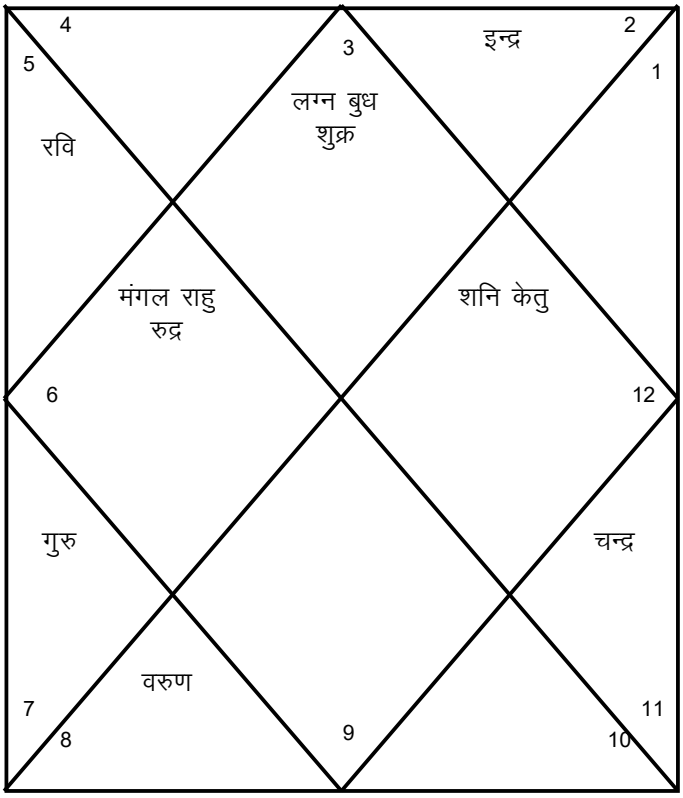

नवमांश — जीवनसाथी

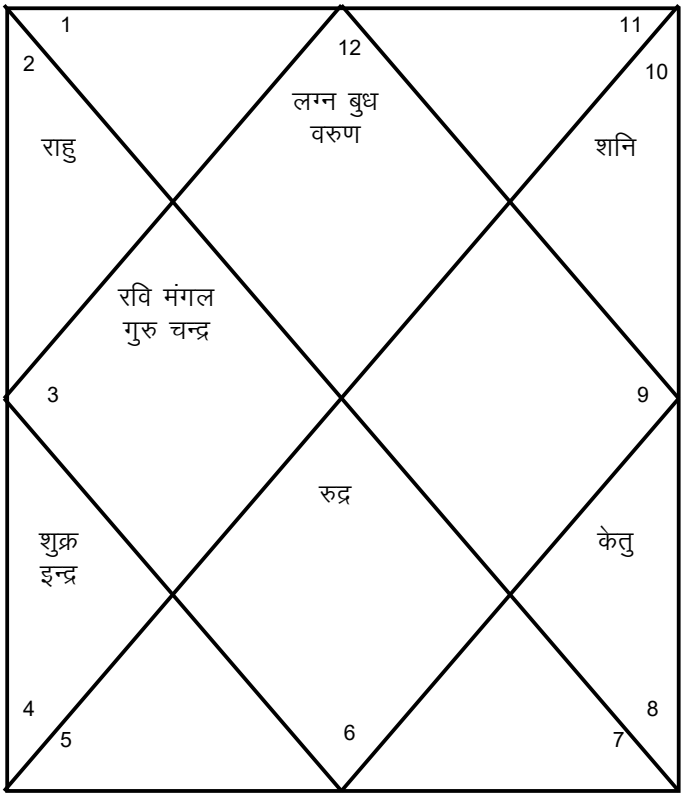

दशमांश — जीविका

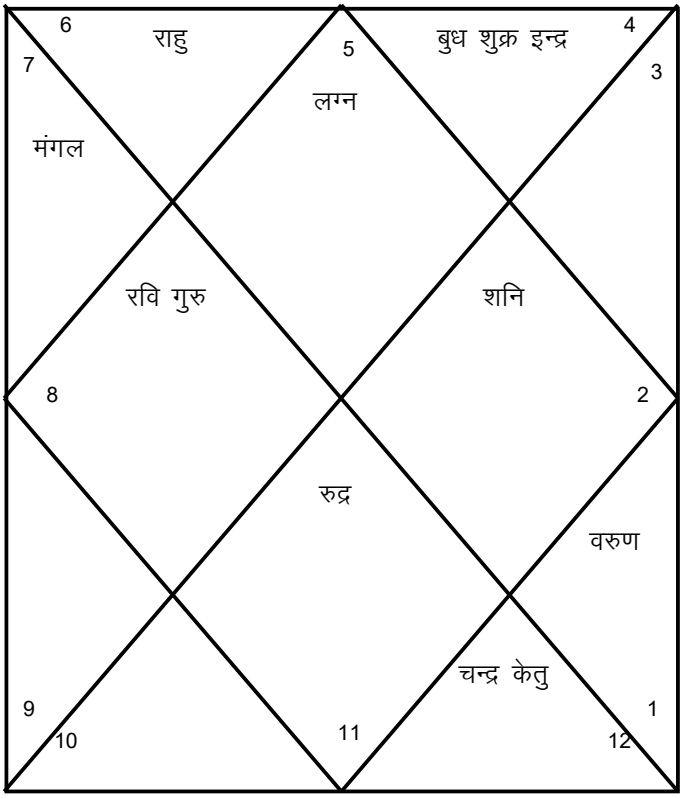

द्वादशांश — माता एवं पिता

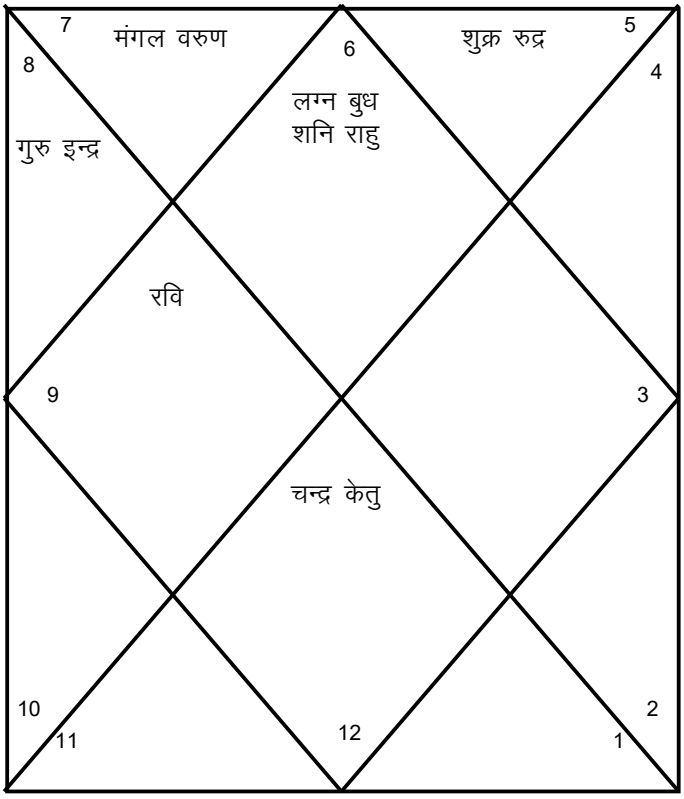

षोडशांश

वाहन

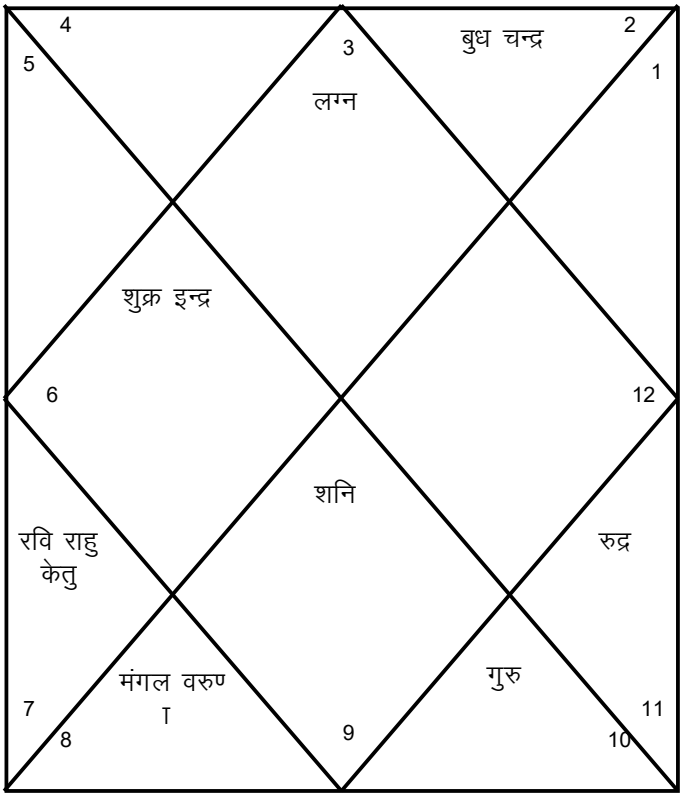

विंशांश

धार्मिक प्रवृत्ति

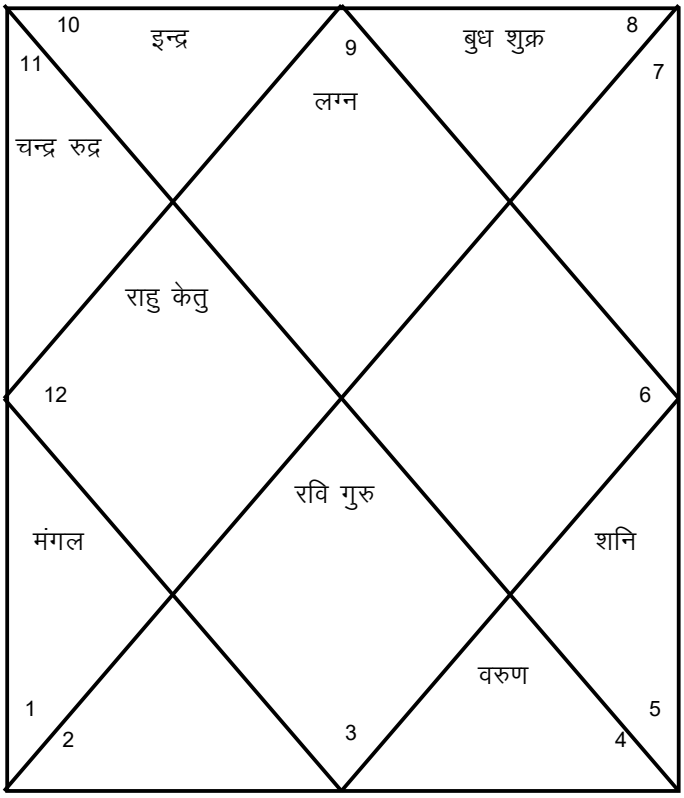

चतुर्विंशांश

शिक्षा

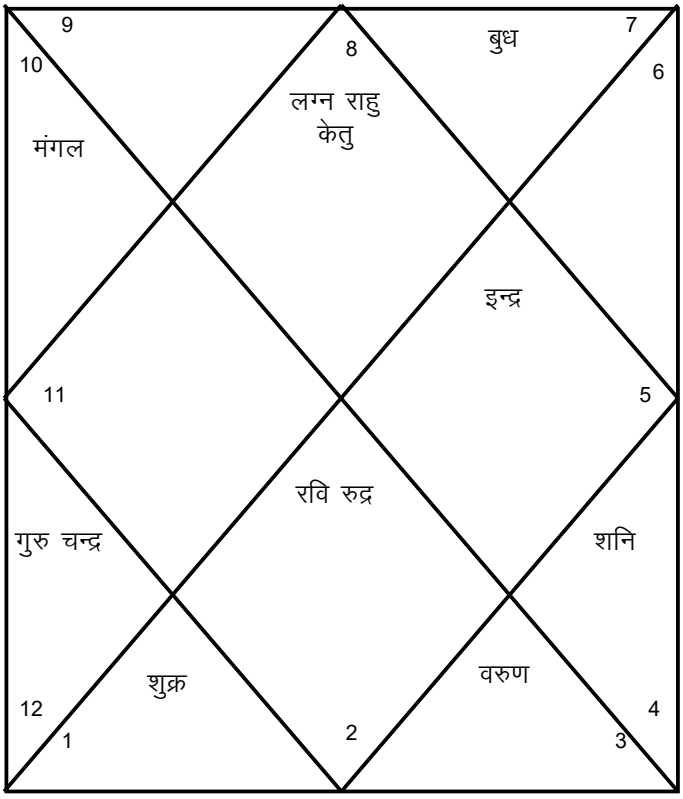

सप्तविंशांश

बल

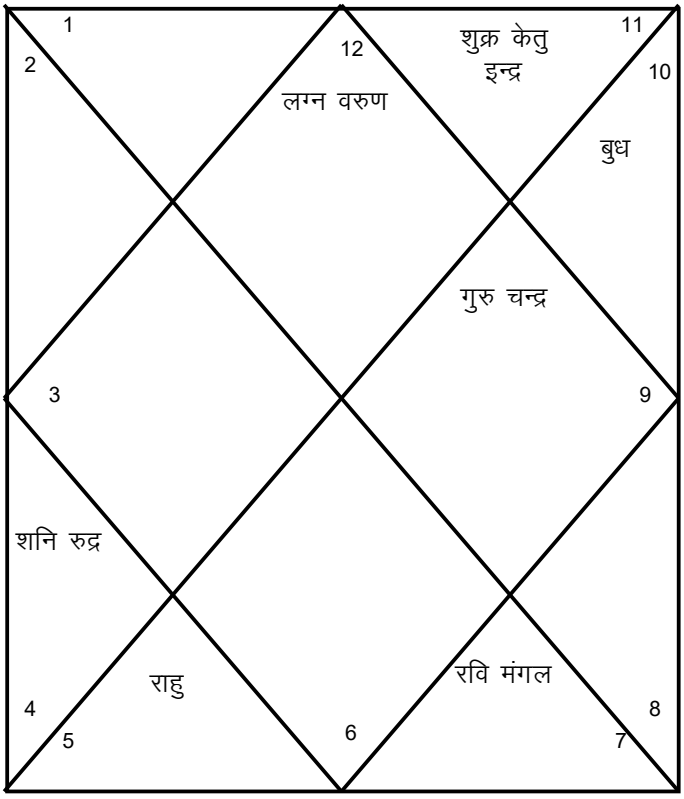

त्रिंशांश

दुर्भाग्य

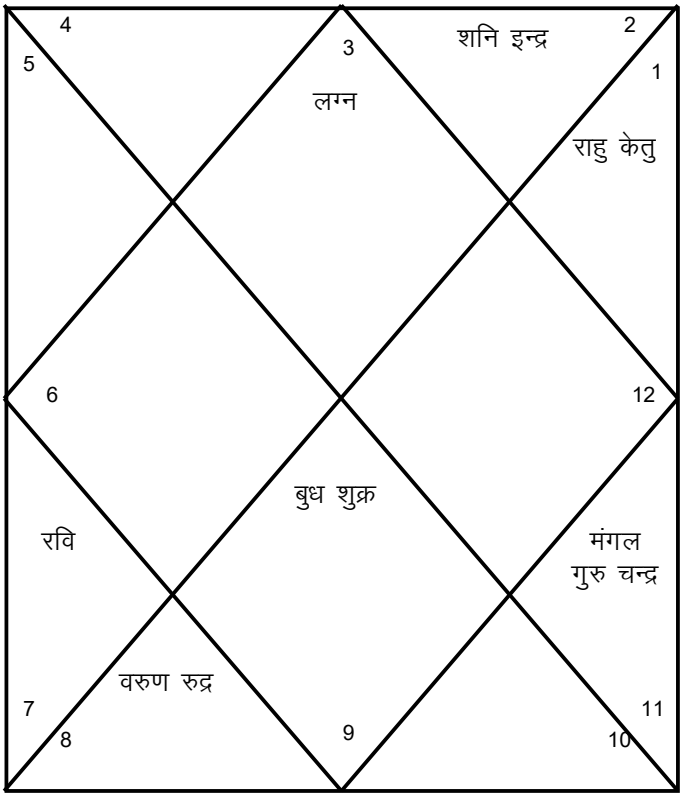

खवेदांश

शुभ फल

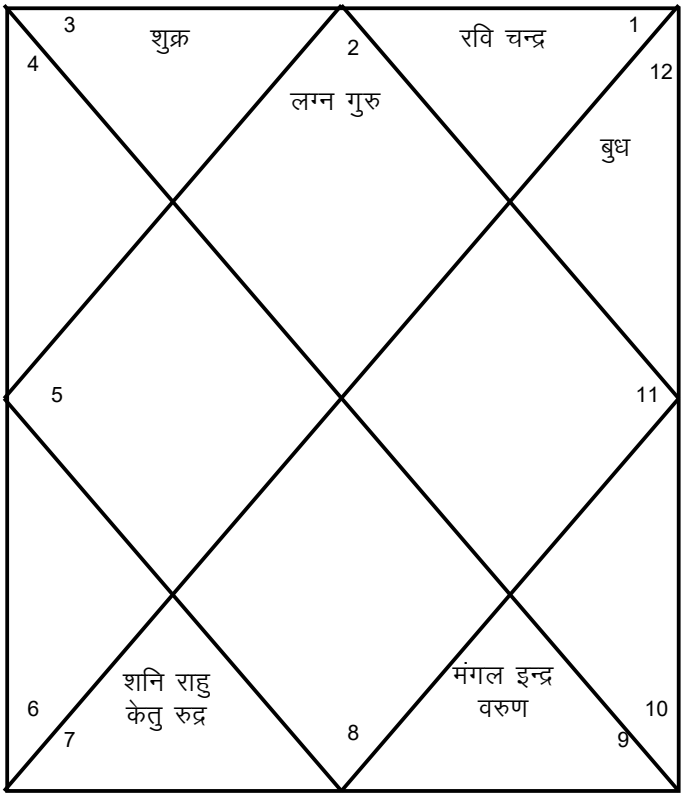

अक्षवेदांश

सार्विक कुशल

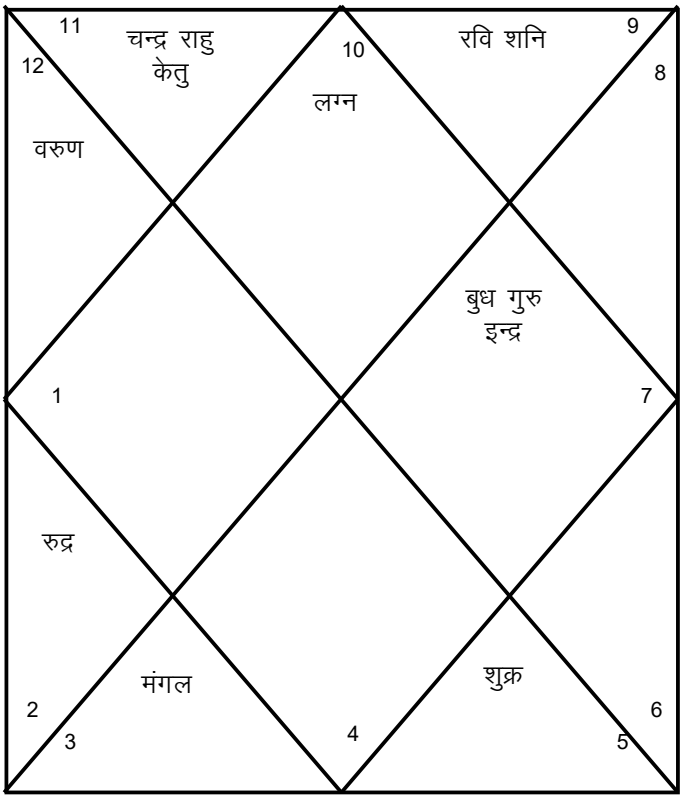

षष्टि अंश

सार्विक कुशल

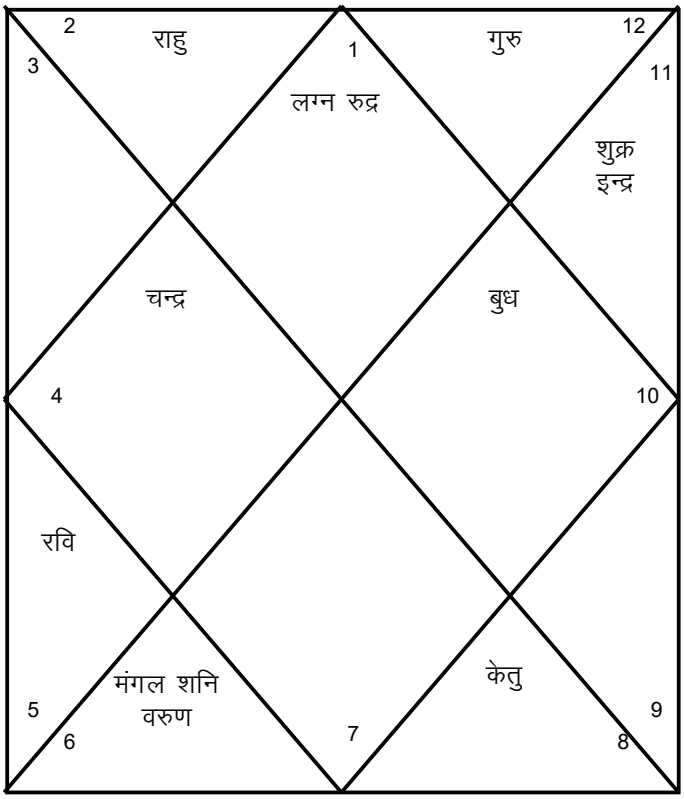

भाव सारिणी

भाव	भाव आरंभ		भाव मध्य	
1	कुम्भ	05:15:06	कुम्भ	19:28:10
2	मीन	05:15:06	मीन	21:02:02
3	मेष	06:48:57	मेष	22:35:53
4	वृषभ	08:22:49	वृषभ	24:09:44
5	मिथुन	08:22:49	मिथुन	22:35:53
6	कर्क	06:48:57	कर्क	21:02:02
7	सिंह	05:15:06	सिंह	19:28:10
8	कन्या	05:15:06	कन्या	21:02:02
9	तुला	06:48:57	तुला	22:35:53
10	वृश्चिक	08:22:49	वृश्चिक	24:09:44
11	धनु	08:22:49	धनु	22:35:53
12	मकर	06:48:57	मकर	21:02:02

भाव चलित चक्र

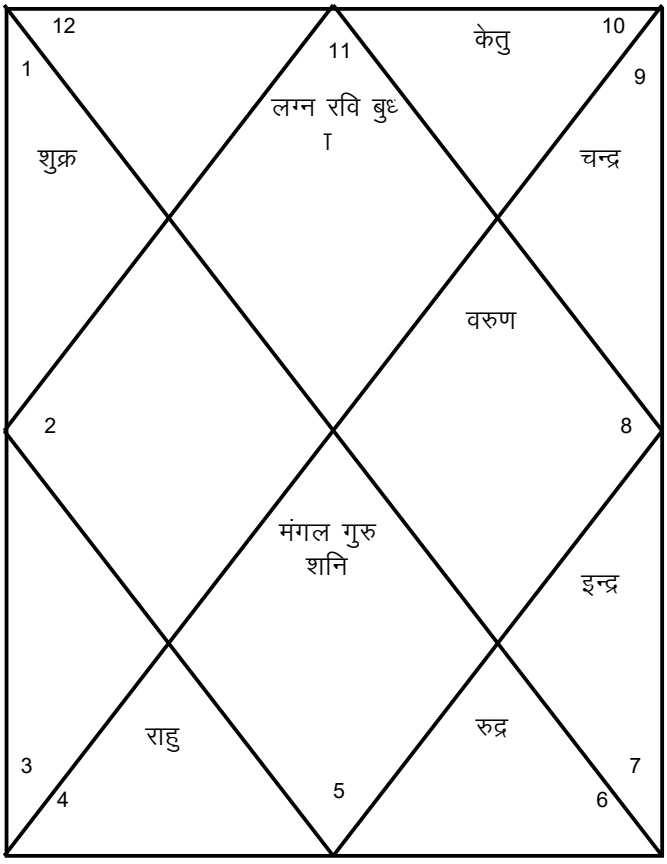

चन्द्र कुन्डली

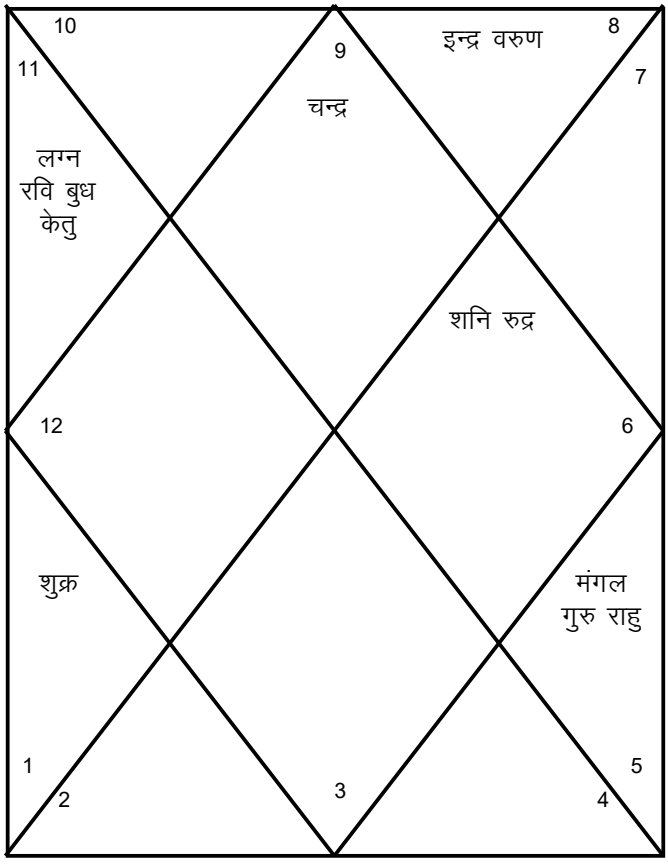

सूर्य सम्बन्धित उपग्रह

उपग्रह	स्वामी	राशी	डिग्री	नक्षत्र	चरण
धूम	मंगल	कर्क	10:21:56	पुष्य	3
व्यातिपात	राहु	धनु	19:38:04	पूर्वाषाढ़ा	2
परिवेश	चन्द्र	मिथुन	19:38:04	अरिद्रा	4
इन्द्रचाप	शुक्र	मकर	10:21:56	श्रवण	1
उपकेतू	केतु	मकर	27:01:56	धनिष्ठा	2
भूकम्प		वृषभ	17:01:56	रोहिणी	3
उल्का		मिथुन	27:01:56	पुनर्वसु	3
ब्रह्मदन्ड		कन्या	03:41:56	उत्तरा	3
ध्वजा		वृश्चिक	23:41:56	ज्येष्ठा	3

वार आधारित उपग्रह (पाराशर)

उपग्रह	राशी	डिग्री	स्वामी	नक्षत्र	चरण
कालबेला	तुला	10:28:17	शुक्र	स्वाति	2
परिधि	वृश्चिक	22:43:05	मंगल	ज्येष्ठा	2
मृत्यु	मकर	04:27:20	शनि	उत्तराषाढ़	3
अर्धप्रहर	कुम्भ	27:02:15	शनि	पूर्व भाद्रपद	3
यमकन्टक	मेष	22:17:48	मंगल	भरणी	3
कोदन्ड	मिथुन	07:32:33	बुध	अरिद्रा	1
गुलिका	सिंह	28:03:38	रवि	उत्तरा	1
मन्दी	कन्या	20:51:06	बुध	हस्त	4

वार आधारित उपग्रह (कालीदास)

उपग्रह	राशी	डिग्री	स्वामी	नक्षत्र	चरण
कालबेला	वृश्चिक	22:43:05	मंगल	ज्येष्ठा	2
परिधि	मकर	04:27:20	शनि	उत्तराषाढ़	3
मृत्यु	कुम्भ	27:02:15	शनि	पूर्व भाद्रपद	3
अर्धप्रहर	मेष	22:17:48	मंगल	भरणी	3
यमकन्टक	मिथुन	07:32:33	बुध	अरिद्रा	1
कोदन्ड	सिंह	28:03:38	रवि	उत्तरा	1
गुलिका	तुला	10:28:17	शुक्र	स्वाति	2
मन्दी	कन्या	20:51:06	बुध	हस्त	4

भिन्न अष्टक वर्ग

शनि

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II
शनि	-	-	-	O	-	-	-	O	-	O	O	-
गुरु	-	-	O	O	-	-	-	-	O	O	-	-
मंगल	-	O	O	O	-	-	O	-	O	O	-	-
रवि	-	O	-	-	O	O	-	O	O	-	O	O
शुक्र	-	-	-	-	-	O	-	-	-	-	O	O
बुध	-	-	-	O	-	O	O	O	O	O	-	-
चन्द्र	-	O	-	-	-	-	O	-	-	-	O	-
लग्न	O	O	-	O	-	-	-	O	O	-	O	-
कुल	1	4	2	5	1	3	3	4	5	4	5	2

गुरु

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II
शनि	-	-	-	-	O	-	-	O	-	O	O	-
गुरु	-	O	O	-	O	O	O	O	-	-	O	O
मंगल	-	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O
रवि	O	O	-	-	O	O	O	O	O	-	O	O
शुक्र	-	O	-	-	O	O	-	-	O	O	O	-
बुध	-	O	O	O	-	-	O	O	O	-	O	O
चन्द्र	O	-	O	-	O	-	O	-	-	O	-	-
लग्न	-	O	O	O	O	-	O	O	O	-	O	O
कुल	2	6	5	2	7	4	5	6	4	3	7	5

मंगल

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II
शनि	O	O	O	O	-	O	-	-	O	-	-	O
गुरु	-	O	O	O	-	-	-	-	-	O	-	-
मंगल	-	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O
रवि	O	-	O	O	-	-	-	O	O	-	-	-
शुक्र	-	-	-	-	-	O	-	O	-	-	O	O
बुध	O	-	O	O	-	-	-	-	O	-	-	-
चन्द्र	-	O	-	-	-	-	O	-	-	-	O	-
लग्न	O	-	-	O	-	-	-	O	O	-	O	-
कुल	4	4	5	5	1	3	1	4	4	1	4	3

रवि

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II
शनि	O	O	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O
गुरु	O	-	O	-	-	-	-	-	O	O	-	-
मंगल	O	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O
रवि	-	O	-	-	O	O	O	O	O	-	O	O
शुक्र	-	-	-	-	-	O	O	-	-	-	-	O
बुध	O	-	O	O	-	-	O	O	O	O	-	-
चन्द्र	-	O	-	-	-	O	O	-	-	-	O	-
लग्न	O	O	-	O	-	-	-	O	O	O	-	-
कुल	5	5	4	3	2	5	5	4	5	3	3	4

भिन्न अष्टक वर्ग

शुक्र

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II
शनि	O	O	O	O	-	-	-	O	O	O	-	-
गुरु	O	O	O	-	-	-	-	-	O	-	-	O
मंगल	O	-	O	O	-	-	O	-	O	O	-	-
रवि	-	-	-	-	-	O	-	-	O	O	-	-
शुक्र	O	O	O	O	O	-	-	O	O	O	O	-
बुध	O	-	O	O	-	-	O	-	O	-	-	-
चन्द्र	O	-	-	O	O	-	O	O	O	O	O	O
लग्न	O	O	O	-	-	O	O	-	O	-	O	O
कुल	7	4	6	5	2	2	4	3	8	5	3	3

बुध

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II
शनि	O	O	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O
गुरु	-	-	O	O	-	-	-	-	-	O	-	O
मंगल	O	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O
रवि	-	-	O	O	-	-	O	-	O	O	-	-
शुक्र	O	O	O	O	O	-	-	O	O	-	O	-
बुध	O	-	O	O	-	-	O	O	O	O	O	-
चन्द्र	-	O	-	O	-	O	O	-	-	O	-	O
लग्न	-	O	-	O	-	O	-	O	O	-	O	O
कुल	4	5	6	7	2	4	4	4	5	4	4	5

चन्द्र

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II
शनि	-	-	-	O	-	-	-	O	-	O	O	-
गुरु	-	O	O	O	O	-	-	O	-	-	O	O
मंगल	O	O	O	-	-	O	O	-	O	O	-	-
रवि	O	-	-	O	O	O	-	O	O	-	-	-
शुक्र	-	-	O	O	O	-	O	-	O	O	O	-
बुध	O	O	O	-	O	O	-	O	O	-	O	-
चन्द्र	-	O	O	-	-	O	O	-	O	-	O	-
लग्न	O	-	-	O	-	-	-	O	O	-	-	-
कुल	4	4	5	5	4	4	3	5	6	3	5	1

लग्न

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II
शनि	-	-	O	O	-	O	-	O	O	-	O	-
गुरु	O	O	O	-	O	O	-	O	O	O	O	-
मंगल	-	O	O	-	O	-	O	-	-	O	-	-
रवि	O	O	-	O	-	-	-	O	O	O	-	-
शुक्र	O	O	O	O	O	-	-	O	O	-	-	-
बुध	-	O	-	O	-	O	-	O	O	-	O	O
चन्द्र	-	O	-	-	-	O	O	O	-	-	O	-
लग्न	O	-	-	O	-	-	-	O	O	-	-	-
कुल	4	6	4	5	3	4	2	7	6	3	4	1

अष्टकवर्ग (शोधनपूर्व)

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
रवि	5	5	4	3	2	5	5	4	5	3	3	4	**48**
चन्द्र	4	4	5	5	4	4	3	5	6	3	5	1	**49**
मंगल	4	4	5	5	1	3	1	4	4	1	4	3	**39**
बुध	4	5	6	7	2	4	4	4	5	4	4	5	**54**
गुरु	2	6	5	2	7	4	5	6	4	3	7	5	**56**
शुक्र	7	4	6	5	2	2	4	3	8	5	3	3	**52**
शनि	1	4	2	5	1	3	3	4	5	4	5	2	**39**
कुल	**27**	**32**	**33**	**32**	**19**	**25**	**25**	**30**	**37**	**23**	**31**	**23**	**337**
राहु	3	2	4	3	5	5	4	3	2	4	4	5	**44**
लग्न	4	6	4	5	3	4	2	7	6	3	4	1	**49**

त्रिकोण शोधन के पश्चात

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रवि	3	2	1	0	0	2	2	1	3	0	0	1
चन्द्र	0	1	2	4	0	1	0	4	2	0	2	0
मंगल	3	3	4	2	0	2	0	1	3	0	3	0
बुध	2	1	2	3	0	0	0	0	3	0	0	1
गुरु	0	3	0	0	5	1	0	4	2	0	2	3
शुक्र	5	2	3	2	0	0	1	0	6	3	0	0
शनि	0	1	0	3	0	0	1	2	4	1	3	0

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रवि	3	0	0	0	0	2	0	0	3	0	0	0
चन्द्र	0	1	1	4	0	1	0	4	2	0	2	0
मंगल	3	3	2	2	0	2	0	0	3	0	3	0
बुध	2	1	2	3	0	0	0	0	3	0	0	0
गुरु	0	3	0	0	5	1	0	4	2	0	2	1
शुक्र	5	1	3	2	0	0	0	0	6	3	0	0
शनि	0	0	0	3	0	0	0	2	4	0	3	0

शोध्य पिन्ड

पिन्ड	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रह	46	35	76	29	125	65	50
राशी	58	111	145	79	169	146	97
शोध्य	**104**	**146**	**221**	**108**	**294**	**211**	**147**

नैसर्गिक

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि	-----	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	मित्र	-----	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	सम	सम
शुक्र	शत्रु	मित्र	-----	सम	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	सम	-----	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	-----	सम	मित्र	मित्र	सम
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	-----	शत्रु	मित्र	शत्रु
चन्द्र	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	-----	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	-----	शत्रु
केतु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-----

तात्कालिक

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि	-----	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	-----	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	-----	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-----	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-----	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	-----	मित्र	मित्र	शत्रु
चन्द्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	-----	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	-----	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	-----

पन्चधा

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि	-----	शत्रु	सम	सम	सम	परमशत्रु	परममित्र	परमशत्रु	परमशत्रु
बुध	सम	-----	परममित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	परममित्र	-----	शत्रु	शत्रु	सम	परमशत्रु	सम	परममित्र
मंगल	सम	परमशत्रु	शत्रु	-----	सम	मित्र	सम	परमशत्रु	सम
गुरु	सम	परमशत्रु	परमशत्रु	सम	-----	मित्र	सम	सम	शत्रु
शनि	परमशत्रु	सम	सम	सम	मित्र	-----	सम	परममित्र	परमशत्रु
चन्द्र	परममित्र	परममित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	-----	परमशत्रु	सम
राहु	परमशत्रु	शत्रु	सम	परमशत्रु	सम	परममित्र	परमशत्रु	-----	परमशत्रु
केतु	परमशत्रु	शत्रु	परममित्र	सम	शत्रु	परमशत्रु	सम	परमशत्रु	-----

सुदर्शन चक्र

02/14/26/38/50/62/74/86/98/110 01/13/25/37/49/61/73/85/97/109 12/24/36/48/60/72/84/96/108/120

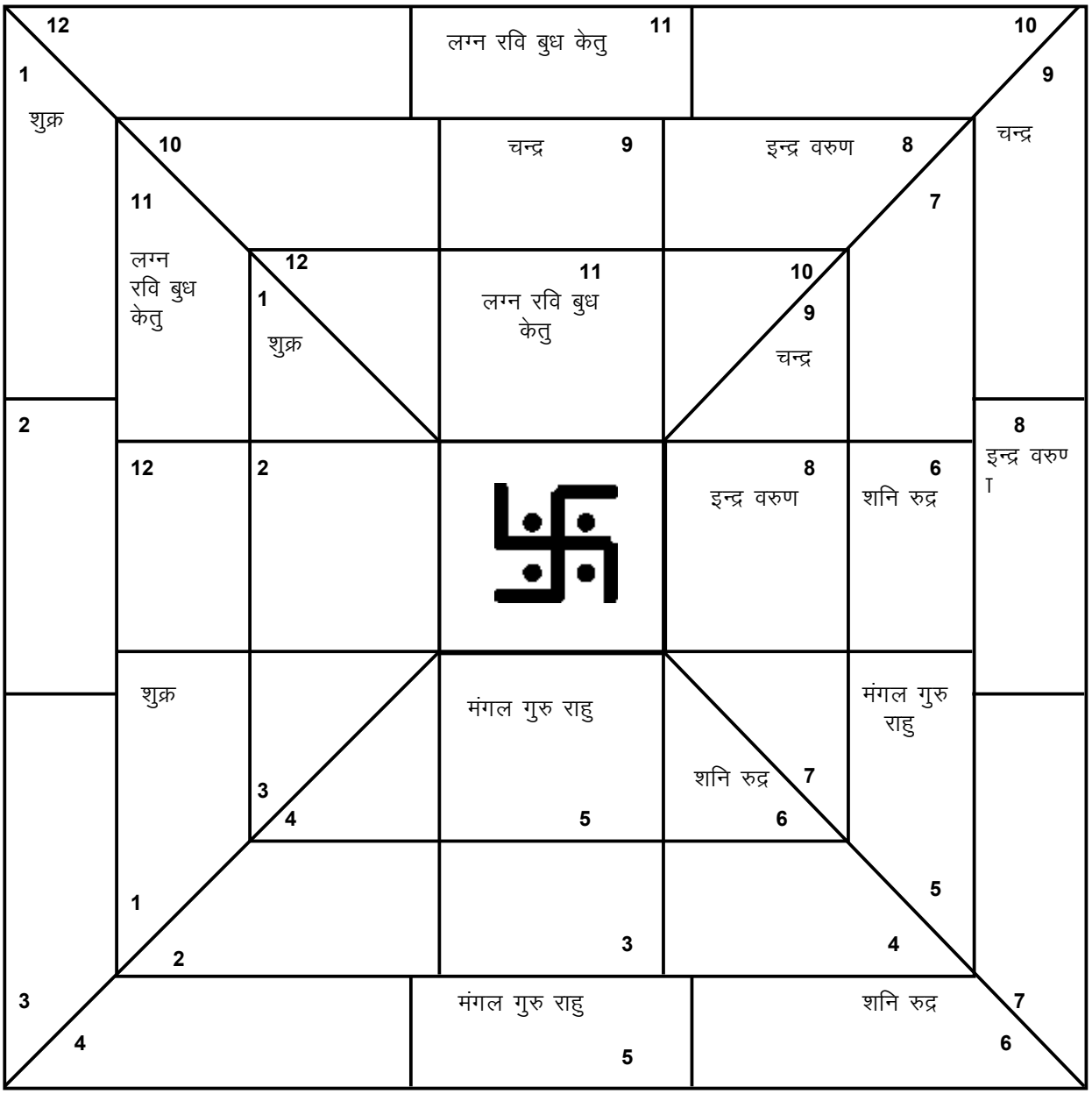

06/18/30/42/54/66/78/90/102 07/19/31/43/55/67/79/91/103 08/20/32/44/56/68/92/104

सुदर्शन चक्र में जातक का भविष्य लग्न के अलावा सूर्य व चन्द्र से भी जांचा जाता है. इसके द्वारा एक निगाह में लग्न सूर्य और चन्द्र से ग्रहों स्थिति प्राप्त की जा सकती है.

शुभ अशुभ घटनायें व उनके घटने का सही समय सुदर्शन चक्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है

कारक ग्रह

	स्थिर कारक	सप्तकारक	अष्टकारक
रवि	पिता	आत्म	आत्मा
बुध	बुद्धि	आमात्य	भ्रातृ
शुक्र	जीवनसाथी	भ्रातृ	मातृ
मंगल	विक्रम	ज्ञाति	ज्ञाती
गुरु	धनसम्पदा	मातृ	पितृ
शनि	परमायु	कलत्र	कलत्र
चन्द्र	माता	पुत्र	पुत्र
राहु	अभिलाषा	————	अमात्य
केतु	मोक्ष	————	————

ग्रहावस्था

	अवस्था 3	अवस्था 5	अवस्था 6	अवस्था 9	अवस्था 10	अवस्था 12
रवि	सुप्त	मृत	क्षुदित	दुखित	पीड़ित	आगम
बुध	स्वप्न	युवा	क्षुदित	दीन	पीड़ित	कौतुक
शुक्र	स्वप्न	कुमार	क्षुदित	दीन	खल	शयन
मंगल	स्वप्न	कुमार	मुदित	शान्त	हर्षित	कौतुक
गुरु	स्वप्न	कुमार	————	शान्त	हर्षित	कौतुक
शनि	स्वप्न	मृत	————	दीन	शान्त	आगमन
चन्द्र	स्वप्न	कुमार	मुदित	शान्त	हर्षित	नेत्रपानी
राहु	सुप्त	बाल	मुदित	दुखित	पीड़ित	भोजन
केतु	स्वप्न	बाल	क्षुदित	दीन	पीड़ित	गमन

नव तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
19	20	21	22	23	24	25	26	27
01	02	03	04	05	06	07	08	09
10	11	12	13	14	15	16	17	18

ग्रह संयोग एवं दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु	इन्द्र	वरुण	रुद्र
लग्न	8	2 CNJ	308	193	190	169	70 QNT	195	15	108	80	142 BQT
रवि		9	316 SSQ	200	197	177 OPP	77	202	22	115	88 SQU	149 QNC
बुध			306	191	188	167	68	193	13	106	79	140
शुक्र				115	119 TRN	139	239 TRN	113	293	201	228 SQQ	166
मंगल					3 CNJ	24	123 TRN	2 CNJ	178 OPP	85	112	51
गुरु						21	120 TRN	5	175	82	109	48 SSQ
शनि							99	26	154	62 SXT	89 SQU	27 SSX
चन्द्र								125	55	38	11	72 QNT
राहु									180 OPP	87 SQU	114	53
केतु										93 SQU	66	127
इन्द्र											27 SSX	34
वरुण												61 SXT

Index of Words:

CNJ: Conjunction TRN: Trine SSQ: Semi Square QNT: Quintile

OPP: Opposition SXT: Sextile QNC: Quincunx BQT: Bi Quintile

SQU: Square SQQ: Sesquiquadrate SSX: Semi Sextile

ग्रह दृष्टि विचार के लिये 3 डिग्री 20 मिनिट का प्रभाव क्षेत्र लिया गया है।

पाराशरी दृष्टि

ग्रह	द्वारा दृष्ट	ग्रह	द्वारा दृष्ट
रवि	मंगल गुरु राहु	शुक्र	गुरु
चन्द्र	गुरु	शनि	––
मंगल	रवि बुध केतु	राहु	रवि बुध केतु
बुध	मंगल गुरु राहु	केतु	मंगल गुरु राहु
गुरु	रवि बुध केतु	लग्न	मंगल गुरु राहु

शनि साड़े साती

शनि साड़े साती	राशी	प्रवेश	निर्गम	मूर्ति
साड़ेसाती	वृश्चिक	21-12-1984	31-05-1985	लोहा
साड़ेसाती	वृश्चिक	17-09-1985	16-12-1987	लोहा
जन्मशनि	धनु	17-12-1987	20-03-1990	स्वर्ण
जन्मशनि	धनु	21-06-1990	14-12-1990	लोहा
साड़ेसाती	मकर	21-03-1990	20-06-1990	स्वर्ण
साड़ेसाती	मकर	15-12-1990	05-03-1993	लोहा
साड़ेसाती	मकर	16-10-1993	09-11-1993	लोहा
कन्टकशनि	मीन	02-06-1995	09-08-1995	ताँबा
कन्टकशनि	मीन	17-02-1996	17-04-1998	लोहा
अष्टमाशनि	कर्क	06-09-2004	13-01-2005	स्वर्ण
अष्टमाशनि	कर्क	26-05-2005	31-10-2006	लोहा
अष्टमाशनि	कर्क	11-01-2007	15-07-2007	ताँबा
साड़ेसाती	वृश्चिक	03-11-2014	26-01-2017	ताँबा
साड़ेसाती	वृश्चिक	21-06-2017	26-10-2017	ताँबा
जन्मशनि	धनु	27-01-2017	20-06-2017	रजत
जन्मशनि	धनु	27-10-2017	23-01-2020	लोहा
साड़ेसाती	मकर	24-01-2020	28-04-2022	स्वर्ण
साड़ेसाती	मकर	13-07-2022	17-01-2023	स्वर्ण
कन्टकशनि	मीन	30-03-2025	02-06-2027	लोहा
कन्टकशनि	मीन	20-10-2027	23-02-2028	ताँबा
अष्टमाशनि	कर्क	13-07-2034	27-08-2036	स्वर्ण
साड़ेसाती	वृश्चिक	12-12-2043	22-06-2044	लोहा
साड़ेसाती	वृश्चिक	30-08-2044	07-12-2046	रजत
जन्मशनि	धनु	08-12-2046	06-03-2049	लोहा
जन्मशनि	धनु	10-07-2049	03-12-2049	लोहा
साड़ेसाती	मकर	07-03-2049	09-07-2049	रजत
साड़ेसाती	मकर	04-12-2049	24-02-2052	लोहा
कन्टकशनि	मीन	15-05-2054	01-09-2054	रजत
कन्टकशनि	मीन	06-02-2055	06-04-2057	ताँबा
अष्टमाशनि	कर्क	24-08-2063	05-02-2064	रजत

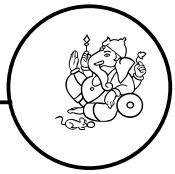

षड बल

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र
उच्च बल	45.68	9.14	55.27	2.89	48.42	43.44	12.24
सप्तवर्गीय बल	80.62	86.25	54.38	45.00	48.75	82.50	86.25
दिन–रात्रि बल	30	15	15	30	30	0	0
केन्द्रादि बल	60.00	60.00	15.00	60.00	60.00	30.00	30.00
द्रेक्कान बल	0.00	15.00	0.00	15.00	15.00	0.00	0.00
स्थान बल	216.3	185.39	139.65	152.89	202.17	155.94	128.49
दिग बल	29.04	59.37	45.68	24.17	3.24	56.39	5.18
नतोन्नत बल	27.57	60.00	27.57	32.43	27.57	32.43	32.43
पक्ष बल	25.78	34.22	34.22	25.78	34.22	25.78	34.22
त्रिभाग बल	0.00	0.00	0.00	0.00	60.00	0.00	0.00
वर्ष बल	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	15.00	0.00
मास बल	0.00	30.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
वार बल	0.00	0.00	0.00	45.00	0.00	0.00	0.00
होरा बल	0.00	0.00	0.00	60.00	0.00	0.00	0.00
अयन बल	26.87	36.28	41.59	39.91	38.89	27.96	58.90
युद्ध बल	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
काल बल	80.22	160.50	103.38	203.12	160.68	101.17	125.55
चेष्टा बल	26.87	55.96	46.83	55.7	56.71	59.92	34.22
नैसर्गिक बल	60	25.71	42.86	17.14	34.29	8.57	51.43
द्रिक बल	-21.06	-13.97	-7.95	4.91	4.91	-3.39	-2.81
कुल षडबल	391.37	472.96	370.45	457.93	462.00	378.60	342.06
रुप में षडबल	6.52	7.88	6.17	7.63	7.70	6.31	5.70
निम्न का अंश	1	1.13	1.12	1.53	1.18	1.26	0.95
स्थान बल अंश	1.31	1.12	1.05	1.59	1.23	1.62	0.97
दिग बल अंश	0.83	1.7	0.91	0.81	0.09	1.88	0.1
काल बल अंश	0.72	1.43	1.03	3.03	1.43	1.51	1.26
चेष्टा बल अंश	0.54	1.12	1.56	1.39	1.13	1.5	1.14
अयन बल अंश	0.9	1.21	1.04	2	1.3	1.4	1.47
स्थिति	4	1	6	3	2	5	7
ईष्ट फल	35.03	22.62	50.88	12.69	52.40	51.02	20.47
कष्ट फल	21.78	14.33	7.89	15.67	6.17	1.15	40.43

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशी	डिग्री	नक्षत्र	र.न.उ. स्वामी	दिशा	अवस्था
लग्न	कुम्भ	19:33:56	शतभिषा	शनि––राहु––मंग		––
रवि	कुम्भ	27:07:41	पूर्व भाद्रपद	शनि––गुरु––शुक्र	मार्गी	––
बुध	कुम्भ	17:40:19	शतभिषा	शनि––राहु––रवि	वक्री	––
शुक्र	मेष	11:17:07	अश्विनी	मंगल––केतु––शि	मार्गी	––
मंगल	सिंह	06:46:48	मघा	रवि––केतु––राहु	वक्री	––
गुरु	सिंह	09:51:03	मघा	रवि––केतु––शनि	वक्री	––
शनि	कन्या	00:24:23	उत्तरा	बुध––रवि––राहु	वक्री	––
चन्द्र	धनु	09:48:07	मूला	गुरु––केतु––शनि	मार्गी	––
राहु	सिंह	04:42:11	मघा	रवि––केतु––चन्द्र	वक्री	––
केतु	कुम्भ	04:42:11	धनिष्ठा	शनि––मंगल––शु	वक्री	––
इन्द्र	वृश्चिक	02:02:03	विशाखा	मंगल––गुरु––राहु	वक्री	––
वरुण	वृश्चिक	29:08:23	ज्येष्ठा	मंगल––बुध––शनि	मार्गी	––
रुद्र	कन्या	27:42:34	चित्रा	बुध––मंगल––गुरु	वक्री	––

पार्स फॉरच्युना: धनु 02:14:22

कृष्णमूर्ति गृह कस्प

गृह	गृह कस्प		र.न.उ. स्वामी	भाव अवधि		
I.	कुम्भ	19:18:19	श––र––मं	319:18:19	–	356:17:17
II.	मीन	26:17:17	गु––बु––गु	356:17:17	–	27:33:
III.	मेष	27:33:24	मं––सू––चं	27:33:	–	54:03:
IV.	वृषभ	24:03:57	शु––मं––मं	54:03:	–	79:07:
V.	मिथुन	19:07:06	बु––र––चं	79:07:	–	106:19:15
VI.	कर्क	16:19:15	चं––श––गु	106:19:15	–	139:18:19
VII.	सिंह	19:18:19	सू––शु––र	139:18:19	–	176:17:17
VIII.	कन्या	26:17:17	बु––मं––गु	176:17:17	–	207:33:24
IX.	तुला	27:33:24	शु––गु––शु	207:33:24	–	234:03:57
X.	वृश्चिक	24:03:57	मं––बु––मं	234:03:57	–	259:07:06
XI.	धनु	19:07:06	गु––शु––र	259:07:06	–	286:19:15
XII.	मकर	16:19:15	श––चं––श	286:19:15	–	319 18:19

भाव ग्रह कारक

भाव कारक ग्रह बल

गृह	महाबली	बली	सामान्य	क्षीण
I.	——	शनि	रवि	——
II.	——	——	शुक्र गुरु	रवि
III.	——	——	मंगल	केतु
IV.	——	——	शुक्र	——
V.	——	——	बुध	——
VI.	——	——	मंगल गुरु चन्द्र राहु	रवि केतु
VII.	——	——	रवि शनि	——
VIII.	——	——	बुध	——
IX.	——	——	शुक्र	——
X.	——	——	मंगल चन्द्र	केतु
XI.	——	——	गुरु	रवि
XII.	——	——	बुध शनि केतु	——

भावों के कारक ग्रह

गृह	क.	ख.	ग.	घ.
I.	शनि	रवि	——	शनि
II.	गुरु	शुक्र	रवि	——
III.	मंगल	——	केतु	——
IV.	शुक्र	——	——	——
V.	बुध	——	——	——
VI.	चन्द्र	मंगल गुरु राहु	——	रवि केतु
VII.	रवि	शनि	शनि	——
VIII.	बुध	——	——	——
IX.	शुक्र	——	——	——
X.	मंगल	चन्द्र	केतु	——
XI.	गुरु	——	रवि	——
XII.	शनि	बुध केतु	——	——

क्रमः क. कस्प राशी स्वामी, ख. भाव स्थित ग्रह, ग. कस्प स्वामी नक्षत्र में ग्रह, घ. भाव स्थित ग्रहों के नक्षत्र में ग्रह.

ग्रहों के कारक भाव

ग्रह	महाबली	बली	सामान्य	क्षीण
रवि	-	-	1 7	2 6 11
बुध	-	-	5 8 12	-
शुक्र	-	-	2 4 9	-
मंगल	-	-	3 6 10	-
गुरु	-	-	2 6 11	-
शनि	-	1	7 12	-
चन्द्र	-	-	6 10	-
राहु	-	-	6	-
केतु	-	-	12	3 6 10

कारक उप पति

गृह	उप पति	महाबली	बली	सामान्य	क्षीण
I.	मंगल	-	-	3 6 10	-
II.	गुरु	-	-	2 6 11	-
III.	चन्द्र	-	-	6 10	-
IV.	मंगल	-	-	3 6 10	-
V.	चन्द्र	-	-	6 10	-
VI.	गुरु	-	-	2 6 11	-
VII.	राहु	-	-	6	-
VIII.	गुरु	-	-	2 6 11	-
IX.	शुक्र	-	-	2 4 9	-
X.	मंगल	-	-	3 6 10	-
XI.	राहु	-	-	6	-
XII.	शनि	-	1	7 12	-

कृष्णमूर्ति लग्न कुन्डली

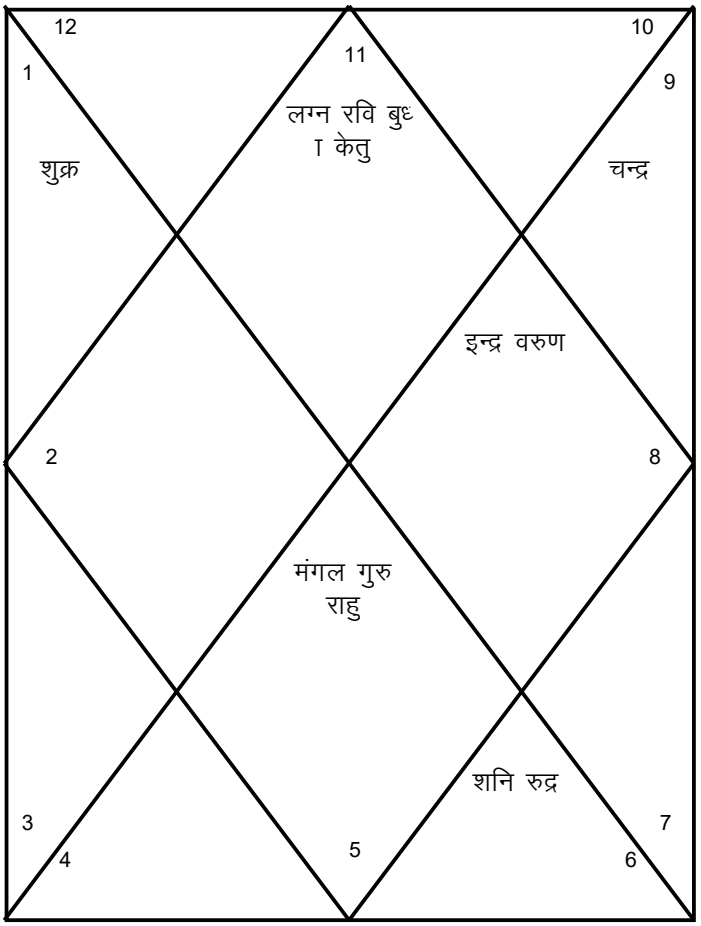

कृष्णमूर्ति भाव कुन्डली

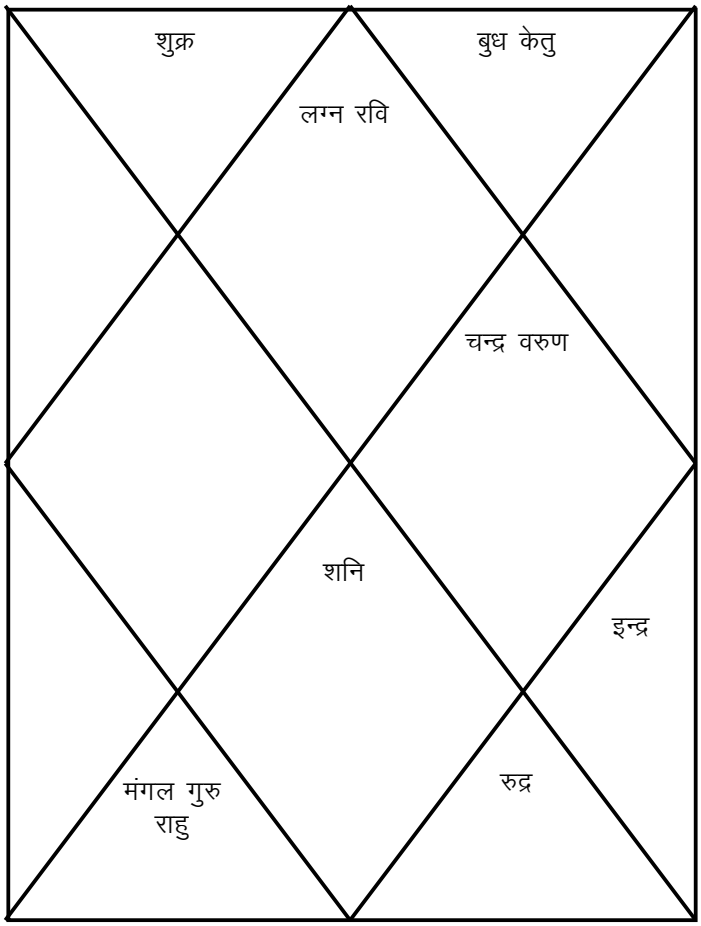

स्वामी ग्रह	
दिन स्वामी	मंगल
लग्न राशी स्वामी	शनि
लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न सब स्वामी	मंगल
चन्द्र राशी स्वामी	गुरु
चन्द्र नक्षत्र स्वामी	केतु
चन्द्र सब स्वामी	शनि

पार्स फॉरच्युना	धनु 02:14:22
के. पी. अयनांश	23:29:02
जन्म समय विंशोत्तरी	केतुः 1 वर्ष
	10 माह 7 दिवस

जैमिनी लग्न एवं स्फुट

लग्न		राशी
जन्म लग्न	:	कुम्भ
द्रेष्काण लग्न (पारंपारिक)	:	मिथुन
द्रेष्काण लग्न (परिवृत्ति त्रय)	:	वृश्चिक
द्रेष्काण लग्न (सोमनाथ)	:	सिंह
नवांश लग्न (पारंपरिक)	:	मीन
नवांश लग्न (कृष्ण मिश्र)	:	मिथुन
अरुढ लग्न (पारंपरिक)	:	मेष
अरुढ लग्न (सशर्त)	:	मेष
उपपद लग्न (पारंपरिक)	:	वृषभ
उपपद लग्न (सशर्त)	:	वृषभ
स्वांश लग्न	:	मीन
कारकांश लग्न	:	मिथुन
पाक लग्न	:	कन्या
होरा लग्न (पारंपरिक)	:	कुम्भ
होरा लग्न (वृद्धिकारक)	:	मकर
होरा लग्न (सव्यव)	:	मीन
भाव लग्न	:	कुम्भ
घटिका लग्न	:	धनु
सपद घटिका लग्न	:	मिथुन
अयुर लग्न	:	मिथुन
वर्णद लग्न	:	मकर
श्री लग्न	:	वृश्चिक
इन्दु लग्न	:	वृषभ
तारा लग्न	:	तुला
नक्षत्र लग्न	:	मिथुन
दिव्य लग्न	:	मीन
त्रिपवन लग्न	:	कन्या
स्फुट योग लग्न	:	मिथुन

जैमिनी लग्न कुन्डलियां

जन्म लग्न

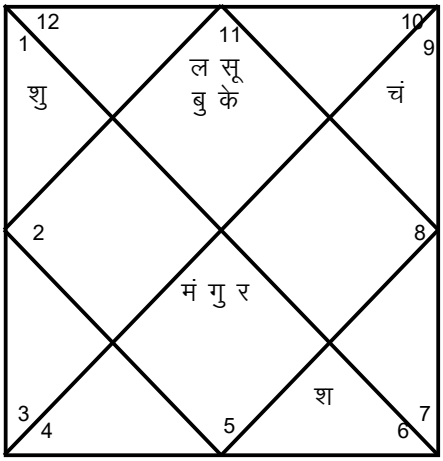

द्रेष्काण पारंपरिक

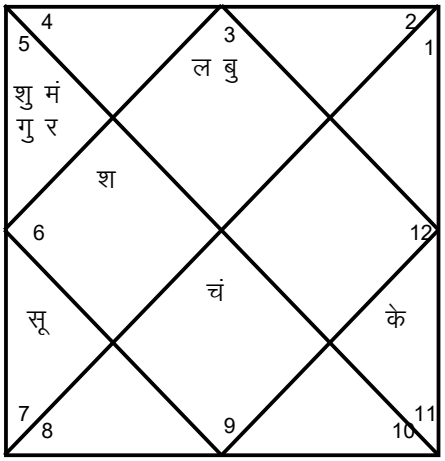

द्रेष्काण परिवृत्ति त्रय

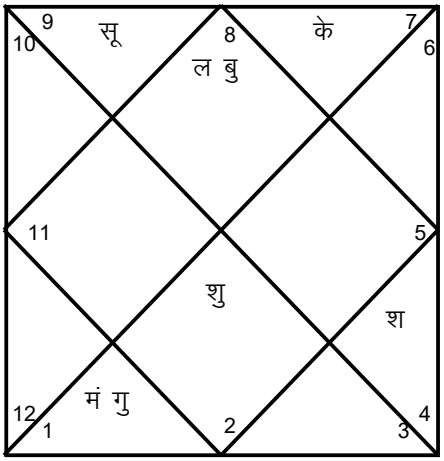

द्रेष्काण सोमनाथ

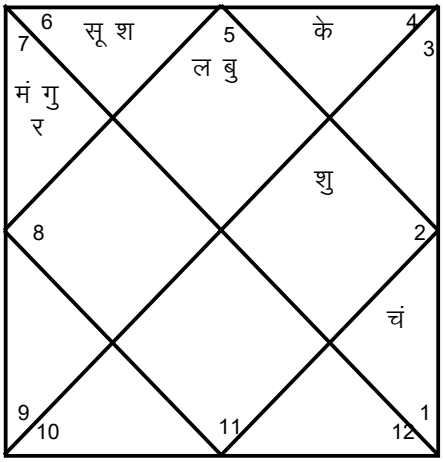

नवांश पारंपरिक

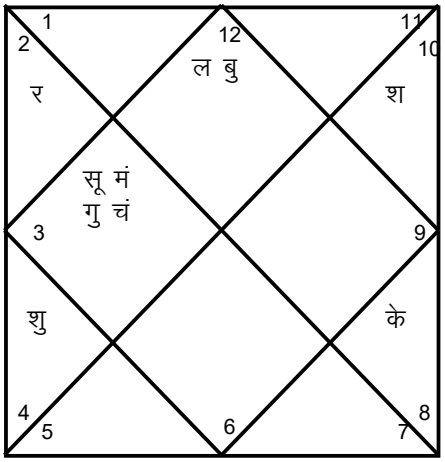

नवांश कृष्ण मिश्र

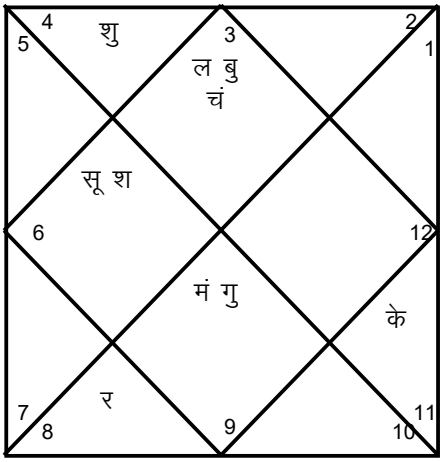

अरुढ लग्न (पारंपरिक)

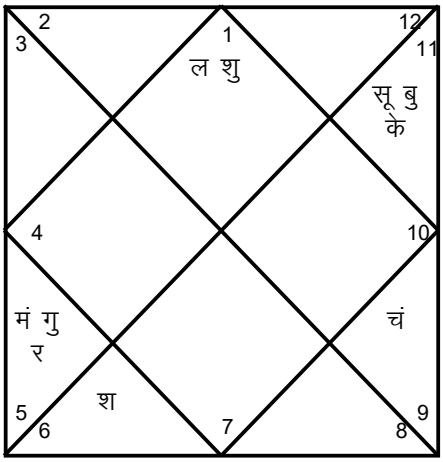

उपपद लग्न

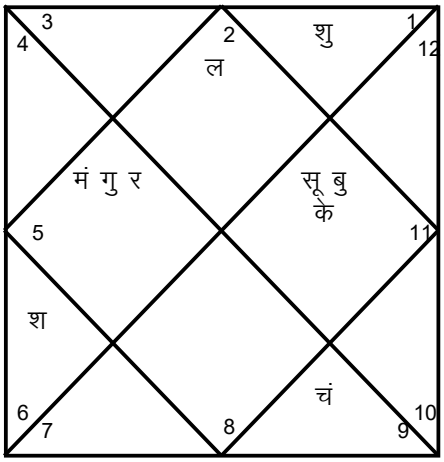

कारकांश लग्न

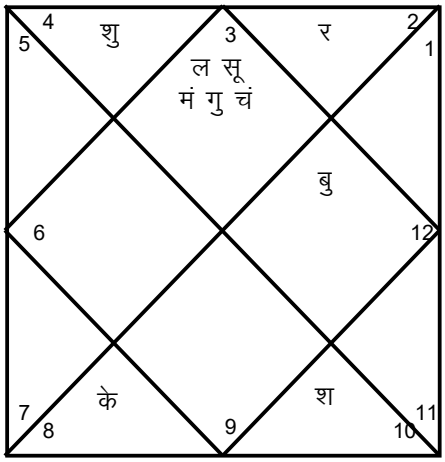

जैमिनी स्फुट

स्फुट नाम	स्फुट	
बीज स्फुट मुख्य	वृषभ	05:21:39
बीज स्फुट उप––1	कर्क	17:58:35
बीज स्फुट उप––2	मकर	20:57:40
क्षेत्र स्फुट मुख्य	मीन	15:54:40
क्षेत्र स्फुट उप––1	सिंह	26:08:41
क्षेत्र स्फुट उप––2	कुम्भ	28:08:26

जैमिनी कारक

ग्रह	अष्ट चर	सप्त चर	सप्त स्थिर	सप्त भाव
रवि	आत्म	आत्म	आत्म	दारा
बुध	भ्रातृ	अमात्य	अमात्य	अपात्य
शुक्र	मातृ	भ्रातृ	दारा	मातृ
मंगल	ज्ञाति	ज्ञाति	भ्रातृ	भ्रातृ
गुरु	पितृ	मातृ	अपात्य	अमात्य
शनि	दारा	दारा	ज्ञाति	आत्म
चन्द्र	अपात्य	अपात्य	मातृ	ज्ञाति
राहु	अमात्य			

जैमिनी दृष्टि

ग्रह	सम्मुख दृष्टि	पार्श्व दृष्टि
मेष –– शु	वृश्चिक	सिंह––कुम्भ
वृषभ	तुला	कर्क––मकर
मिथुन	धनु –– चन्द्र	कन्या––मीन
कर्क	कुम्भ –– लग्न –– रवि –– बुध	वृषभ––वृश्चिक
सिंह –– मं –– गु ––	मकर	मेष––तुला
कन्या –– श	मीन	मिथुन––धनु
तुला	वृषभ	सिंह––कुम्भ
वृश्चिक	मेष –– शुक्र	कर्क––मकर
धनु –– चं	मिथुन	कन्या––मीन
मकर	सिंह –– मंगल –– गुरु –– राहु	वृषभ––वृश्चिक
कुम्भ –– ल –– सू ––	कर्क	मेष––तुला
मीन	कन्या –– शनि	मिथुन––धनु

विंशोत्तरी दशा (महादशा)

केतु	7 वर्ष
से	04-02-1975
तक	04-02-1982
केतु	04-02-1975
शुक्र	03-07-1975
रवि	02-09-1976
चन्द्र	08-01-1977
मंगल	09-08-1977
राहु	05-01-1978
गुरु	23-01-1979
शनि	30-12-1979
बुध	08-02-1981

शुक्र	20 वर्ष
से	04-02-1982
तक	04-02-2002
शुक्र	04-02-1982
रवि	06-06-1985
चन्द्र	06-06-1986
मंगल	04-02-1988
राहु	06-04-1989
गुरु	06-04-1992
शनि	06-12-1994
बुध	05-02-1998
केतु	05-12-2000

रवि	6 वर्ष
से	04-02-2002
तक	04-02-2008
रवि	04-02-2002
चन्द्र	25-05-2002
मंगल	23-11-2002
राहु	31-03-2003
गुरु	23-02-2004
शनि	11-12-2004
बुध	23-11-2005
केतु	30-09-2006
शुक्र	04-02-2007

चन्द्र	10 वर्ष
से	04-02-2008
तक	04-02-2018
चन्द्र	04-02-2008
मंगल	04-12-2008
राहु	06-07-2009
गुरु	04-01-2011
शनि	05-05-2012
बुध	04-12-2013
केतु	05-05-2015
शुक्र	04-12-2015
रवि	05-08-2017

मंगल	7 वर्ष
से	04-02-2018
तक	04-02-2025
मंगल	04-02-2018
राहु	03-07-2018
गुरु	21-07-2019
शनि	26-06-2020
बुध	05-08-2021
केतु	02-08-2022
शुक्र	29-12-2022
रवि	28-02-2024
चन्द्र	05-07-2024

राहु	18 वर्ष
से	04-02-2025
तक	04-02-2043
राहु	04-02-2025
गुरु	18-10-2027
शनि	13-03-2030
बुध	17-01-2033
केतु	06-08-2035
शुक्र	24-08-2036
रवि	24-08-2039
चन्द्र	18-07-2040
मंगल	17-01-2042

गुरु	16 वर्ष
से	04-02-2043
तक	04-02-2059
गुरु	04-02-2043
शनि	25-03-2045
बुध	06-10-2047
केतु	11-01-2050
शुक्र	18-12-2050
रवि	18-08-2053
चन्द्र	07-06-2054
मंगल	06-10-2055
राहु	11-09-2056

शनि	19 वर्ष
से	04-02-2059
तक	04-02-2078
शनि	04-02-2059
बुध	07-02-2062
केतु	17-10-2064
शुक्र	25-11-2065
रवि	25-01-2069
चन्द्र	07-01-2070
मंगल	08-08-2071
राहु	17-09-2072
गुरु	24-07-2075

बुध	17 वर्ष
से	04-02-2078
तक	04-02-2095
बुध	04-02-2078
केतु	02-07-2080
शुक्र	29-06-2081
रवि	29-04-2084
चन्द्र	05-03-2085
मंगल	04-08-2086
राहु	02-08-2087
गुरु	19-02-2090
शनि	26-05-2092

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर

मंगल

से	04-02-2018
तक	03-07-2018
मंगल	04-02-2018
राहु	13-02-2018
गुरु	07-03-2018
शनि	27-03-2018
बुध	20-04-2018
केतु	11-05-2018
शुक्र	19-05-2018
रवि	13-06-2018
चन्द्र	21-06-2018

राहु

से	03-07-2018
तक	21-07-2019
राहु	03-07-2018
गुरु	30-08-2018
शनि	20-10-2018
बुध	20-12-2018
केतु	12-02-2019
शुक्र	06-03-2019
रवि	09-05-2019
चन्द्र	28-05-2019
मंगल	29-06-2019

गुरु

से	21-07-2019
तक	26-06-2020
गुरु	21-07-2019
शनि	05-09-2019
बुध	29-10-2019
केतु	16-12-2019
शुक्र	05-01-2020
रवि	02-03-2020
चन्द्र	19-03-2020
मंगल	16-04-2020
राहु	06-05-2020

शनि

से	26-06-2020
तक	05-08-2021
शनि	26-06-2020
बुध	29-08-2020
केतु	26-10-2020
शुक्र	18-11-2020
रवि	25-01-2021
चन्द्र	14-02-2021
मंगल	20-03-2021
राहु	13-04-2021
गुरु	12-06-2021

बुध

से	05-08-2021
तक	02-08-2022
बुध	05-08-2021
केतु	25-09-2021
शुक्र	16-10-2021
रवि	16-12-2021
चन्द्र	03-01-2022
मंगल	02-02-2022
राहु	23-02-2022
गुरु	19-04-2022
शनि	06-06-2022

केतु

से	02-08-2022
तक	29-12-2022
केतु	02-08-2022
शुक्र	11-08-2022
रवि	05-09-2022
चन्द्र	12-09-2022
मंगल	25-09-2022
राहु	03-10-2022
गुरु	26-10-2022
शनि	15-11-2022
बुध	08-12-2022

शुक्र

से	29-12-2022
तक	28-02-2024
शुक्र	29-12-2022
रवि	10-03-2023
चन्द्र	01-04-2023
मंगल	06-05-2023
राहु	31-05-2023
गुरु	03-08-2023
शनि	29-09-2023
बुध	05-12-2023
केतु	04-02-2024

रवि

से	28-02-2024
तक	05-07-2024
रवि	28-02-2024
चन्द्र	06-03-2024
मंगल	16-03-2024
राहु	24-03-2024
गुरु	12-04-2024
शनि	29-04-2024
बुध	19-05-2024
केतु	06-06-2024
शुक्र	14-06-2024

चन्द्र

से	05-07-2024
तक	03-02-2025
चन्द्र	05-07-2024
मंगल	23-07-2024
राहु	04-08-2024
गुरु	05-09-2024
शनि	04-10-2024
बुध	06-11-2024
केतु	07-12-2024
शुक्र	19-12-2024
रवि	23-01-2025

त्रिभागी दशा

केतु

से	11-03-1980
तक	18-06-1981
केतु	26-01-1977
शुक्र	06-11-1977
रवि	30-01-1978
चन्द्र	21-06-1978
मंगल	28-09-1978
राहु	11-06-1979
गुरु	24-01-1980
शनि	20-10-1980
बुध	18-06-1981

शुक्र

से	18-06-1981
तक	18-10-1994
शुक्र	07-09-1983
रवि	08-05-1984
चन्द्र	18-06-1985
मंगल	29-03-1986
राहु	29-03-1988
गुरु	07-01-1990
शनि	17-02-1992
बुध	07-01-1994
केतु	18-10-1994

रवि

से	18-10-1994
तक	18-10-1998
रवि	30-12-1994
चन्द्र	01-05-1995
मंगल	25-07-1995
राहु	29-02-1996
गुरु	11-09-1996
शनि	30-04-1997
बुध	23-11-1997
केतु	16-02-1998
शुक्र	18-10-1998

चन्द्र

से	18-10-1998
तक	18-06-2005
चन्द्र	08-05-1999
मंगल	27-09-1999
राहु	26-09-2000
गुरु	17-08-2001
शनि	07-09-2002
बुध	18-08-2003
केतु	07-01-2004
शुक्र	16-02-2005
रवि	18-06-2005

मंगल

से	18-06-2005
तक	16-02-2010
मंगल	26-09-2005
राहु	09-06-2006
गुरु	22-01-2007
शनि	19-10-2007
बुध	16-06-2008
केतु	23-09-2008
शुक्र	04-07-2009
रवि	27-09-2009
चन्द्र	16-02-2010

राहु

से	16-02-2010
तक	16-02-2022
राहु	05-12-2011
गुरु	11-07-2013
शनि	05-06-2015
बुध	15-02-2017
केतु	29-10-2017
शुक्र	30-10-2019
रवि	05-06-2020
चन्द्र	05-06-2021
मंगल	16-02-2022

गुरु

से	16-02-2022
तक	17-10-2032
गुरु	21-07-2023
शनि	29-03-2025
बुध	02-10-2026
केतु	17-05-2027
शुक्र	24-02-2029
रवि	07-09-2029
चन्द्र	29-07-2030
मंगल	13-03-2031
राहु	17-10-2032

शनि

से	17-10-2032
तक	17-06-2045
शनि	19-10-2034
बुध	04-08-2036
केतु	01-05-2037
शुक्र	11-06-2039
रवि	28-01-2040
चन्द्र	17-02-2041
मंगल	14-11-2041
राहु	09-10-2043
गुरु	17-06-2045

बुध

से	17-06-2045
तक	16-10-2056
बुध	25-01-2047
केतु	23-09-2047
शुक्र	13-08-2049
रवि	08-03-2050
चन्द्र	16-02-2051
मंगल	15-10-2051
राहु	27-06-2053
गुरु	31-12-2054
शनि	16-10-2056

योगिनी दशा

दशा	पति	उम्र	तक
उल्का	शनि	6 साल	28-10-1981
सिद्धा	शुक्र	7 साल	28-10-1988
संकटा	राहु	8 साल	28-10-1996
मंगला	चन्द्र	1 साल	28-10-1997
पिंगला	रवि	2 साल	28-10-1999
धान्य	गुरु	3 साल	28-10-2002
भ्रामारी	मंगल	4 साल	28-10-2006
भद्रिका	बुध	5 साल	28-10-2011
उल्का	शनि	6 साल	28-10-2017
सिद्धा	शुक्र	7 साल	28-10-2024
संकटा	राहु	8 साल	28-10-2032
मंगला	चन्द्र	1 साल	28-10-2033
पिंगला	रवि	2 साल	28-10-2035
धान्य	गुरु	3 साल	28-10-2038
भ्रामारी	मंगल	4 साल	28-10-2042
भद्रिका	बुध	5 साल	28-10-2047

शटत्रिंश दशा

पति	उम्र	तक
चन्द्र	1 साल	18-06-1980
रवि	2 साल	18-06-1982
गुरु	3 साल	18-06-1985
मंगल	4 साल	18-06-1989
बुध	5 साल	18-06-1994
शनि	6 साल	18-06-2000
शुक्र	7 साल	19-06-2007
राहु	8 साल	19-06-2015
चन्द्र	1 साल	18-06-2016
रवि	2 साल	18-06-2018
गुरु	3 साल	18-06-2021
मंगल	4 साल	18-06-2025
बुध	5 साल	18-06-2030
शनि	6 साल	18-06-2036
शुक्र	7 साल	19-06-2043
राहु	8 साल	19-06-2051

दशा स्वामी ग्रहों की स्थितियां, ग्रह दशा उम्र व दशा चक्र की उम्र योगिनी और शट त्रिम्श दशा में समान होती है। दोनों दशाओं में सिर्फ दशा की शुरुआत अलग ग्रहों से होती है, बाकी सभी बातें समान हैं।

पाराशर की उपदेश है की अगर जातक का जन्म दिन सूर्य होरा में हो या रात में चन्द्र होरा में हो तो शट त्रिंश दशा का उपयोग करना चाहिये

इसी युक्ति से अगर जन्म दिन में चन्द्र होरा या रात में सूर्य होरा में हो तो योगिनी दशा का इस्तेमाल करना चाहिये

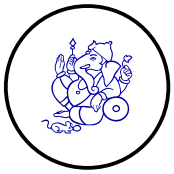

ग्रह योग फल

दमारुक योग

जीवन के तीन भागो में से प्रथम अंश आपके लिये सर्वश्रेष्ठ होगा। मध्य भाग के दरमियान (२४ से ४८ तक) आपके जीवन में ऐसी परिस्थितियां आयेंगी जिनके ऊपर आपका नियंत्रण नहीं रहेगा व आपकी प्रगति में अड़चन होगी। अगर आपकी कुन्डली में और शुभ योग हैं तो इसके प्रभाव में परिवर्तन हो सकता है।

गुरु मन्गल योग

यह एक शुभ योग है। यह योग आपको प्रसिद्धी और आदर दिलायेगा। आपका शरीर सु.ढ, प्रभावशाली व्यक्तित्व और बड़ा परिवार (शायद संयुक्त परिवार) होगा। आप किसी प्रतिष्ठान के प्रमुख बनेंगे और विविध क्षेत्रों से धन कमा कर धनवान बनेंगे। आपका मित्र मंडल बहुत बडा होगा और आप उदारता से खर्च कर के सुखी जीवन बिताएंगे।

अनिवाहुप्पु योग

यह एक भाग्यदायक योग है। आप में कइ विशिष्ट गुण व हुनर हैं। आप स्व–निर्मित व्यक्ति हैं जो अपने प्रयत्नों से जीवन में उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। अपने क्षेत्र में आप एक प्रमुख व्यक्ति बनेंगे व लोग आपका आदर करेंगे।

गुरुचन्डाल योग

यह योग अनुकूल नहीं है। जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण दार्शनिक होगा, व आप नास्तिक भी हो सकते हैं। हो सकता है आपके परिवार में आपको सहानुभूति न मिले व अपने जीवनसाथी के लिये आप एक न समझ में आने वाली पहेली बन जायें। आपके सम्बन्ध निम्न कोटि के व्यक्तियों से हो सकते हैं जिनसे आपको आदर प्राप्त होगा।

बन्धु पूज्य योग

यह एक अच्छा योग है। आपकी उपलब्धियाँ बहुत उच्च होंगी जिन की वजह से आपके मित्र तथा सम्बन्धी आपके साथ आदर युक्त व्यवहार करेंगे।

ग्रहदृष्टि के फल

रवि सेमी स्क्वायर शुक्र
आपको धन के खोने या अधिक खर्च होने से मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपनी सभी चीजों को संभाल कर रखना चाहिए। आपको निराशा व कलह से बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

रवि विपरीत शनि
आप मे विवधता के लिए भूख है जिसके कारण आप बार–बार अपना व्यवसाय बदलते हैं। आप मेहनती व्यक्ति हैं हाँलाकि अपनी मेहनत का फल आपको देर से मिलता है। आपको अपने स्वास्थय का ध्यान रखना चाहिए। आपके रास्ते में कुछ रुकावटें तथा निराशाएं आती है। आप आध्यात्म तथा ध्यान मे रुचि रखते हैं जिससे आपको काफी मदद मिलती है।

रवि स्क्वायर वरुण
अपने दैनिक जीवन में लगातार बदलाव के कारण आप हमेशा असंमजस में रहते हैं। आपमें किसी कार्य मे डूब जाने की धुन सवार रहती है। आपको दूसरों मे काम बाँटना खूब आता है।

शुक्र ट्राइन गुरु
गुरु व शुक्र का गठबंधन आपको विन्रमता व मेलजोल की भावना देता है। आपके पूंजी निवेश आपको इतना अच्छा लाभ देते हैं कि आप बहुत बड़ी बाजी खेलने के चक्कर में पड़ जाते हैं। आप धार्मिक व आध्यात्मिक कार्यों मे भी भाग ले सकते हैं।

शुक्र ट्राइन चन्द्र
आपका जीवन खुशी व उतेजना से भरपूर रहेगा। आपका मैत्रीपूर्ण स्वभाव व गर्मजोशी अपको सबका प्रिय बनाती है। आप अपने प्रेमी के साथ काफी वक्त साथ गुजारेंगे। आप को व्यापारी वर्ग से लाभ रहेगा।

मंगल संयोग गुरु
मंगल व बृहस्पति का योग आपको उत्साही व नेता बनाता है। आपको समाज में यश मिलता है। आपकी बहादुरी व आत्मविशवास आपको कठिनाईयों से गुजरने की ताकत देते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। आपका भाग्य आपको खतरनाक कामो मे भी मदद करता है।

मंगल ट्राइन चन्द्र
आप आर्थिक रुप से सहत रहेगे। आप भावुक व्यक्ति हैं, यदि आपकी भावनाएँ सकारात्मक हो तो आपको इससे काफी लाभ मिलेगा।

मंगल संयोग राहु
मंगल व राहु का योग आपमें बाहरी गतिविधियों के लिए आकर्षण पैदा करता है , जिससे आपके व्यक्तित्व के शारीरिक भाग की उन्नति होती है , आप खेलो मे भाग लेगें। आपके अपने भाई बहनो के सम्बन्ध मधुर रहेगे , जिनकी आपके जीवन मे महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

गुरु ट्राइन चन्द्र

सकारत्मकता आपके स्वभाव का प्रमुख अंग है। आशावाद, उदारता तथा मददगार रवैया आपके व्यक्तित्व का हिस्सा है। आप लोगों से सहयोग प्राप्त करते हैं तथा जीवन मे अच्छी स्थिति प्राप्त करेंगे। धार्मिक तथा आध्यात्मिक मसले आपको आकर्षित करेंगे।

गुरु सेमी स्क्वायर रुद्र

आप बहुत अधिक महत्वाकाँक्षी है। आप महान आदर्शों का अनुकरण करते हैं। आपका वास्ता उच्चाधिकारियों से पडेगा इसलिए आपको नीतिवान होना जरुरी है। आपको एक योजना पर अंधविश्वास करके नहीं चलना चाहिए जबकि आपके सामने दूसरे विकल्प हों।

शनि सेक्सटाइल इन्द्र

शनि–यूरेनस का दृष्टि सम्बन्ध आपको धैर्य देता है। आप शिक्षा व अध्यापन के कार्य मे काफी सफल हो सकते हैं। आप को जीवन मे अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु अंत मे आप सफल होगे।

शनि स्क्वायर वरुण

शनि नेपत्यून का कोणीय दृष्टि सम्बन्ध आपके जीवन में अनिश्चियतता पैदा करेगा। आपकी सेहत भी खराब हो सकती है इसलिए अपना शरीर तन्दुरस्त रखें।

शनि सेमी सेक्सटाइल रुद्र

आप एक मेहनती इन्सान हैं तथा मुश्किल समय को भी आसानी से काट लेते हैं। अपने व्यक्तित्व व व्यवहार के कारण आपको अपने अधिकारियों से उचित सम्मान मिलेगा।

केतु स्क्वायर इन्द्र

केतु यूरेनस के कोणीय सम्बन्ध के कारण आप कभी संवेदनशील और कभी लापरवाह हो जाते है। आपको जोखिम भरे कार्य करने में मजा आता है। आप अक्सर जोखिम भरे कार्य करते भी है।

इन्द्र सेमी सेक्सटाइल वरुण

आपकी दर्शन व आध्यात्म में गहरी रुचि रहेगी। आप कलात्मक कार्य भी करना चाहेंगे।

वरुण सेक्सटाइल रुद्र

यह ज्योतिष स्थिति बतलाती है कि आपकी दर्शन और मनोविज्ञान मे गहरी रुचि है। कभी–कभार आपको मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता हैं अतः अपना विश्वास बढ़ाएं।

भविष्यवाणी

खास खूबियां

आपका चित्त स्थिर व शांत है। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी जिससे आप किसी विषय में तुरंत निर्णय लेने में सक्षम होंगे। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी होंगे, आप बड़े से बड़ा काम हो अथवा छोटा काम बड़े ही प्यार से करेंगे। आपके शत्रु कम होंगे, किंतु अपनी अव्यवस्था के कारण आप स्वयं को कठिनाई में डाल सकते हैं।

आप कला, साहित्य, कानून और दर्शनशास्त्र का अभ्यास करेंगे। आपका मस्तिष्क सदैव चंचल रहेगा फलतः आपके मन में नए–नए विचारों और रचनाओं का जन्म होता रहेगा। आपके कई प्रेम सम्बन्ध हो सकते हैं। आपसे ईर्ष्या करने वाले लोगों पर आप हमेशा विजय प्राप्त करेंगे।
आपका जीवन अपने जन्मस्थल से दूर गुजरेगा। आपको विरासत में संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपका मस्तिष्क दार्शनिक है और स्वभाव शांत। शुरुआत के वर्षो में जीविकोपार्जन में कठिनाइयां आ सकती हैं किंतु बाद में आप काफी धन कमायेंगे व सफलता प्राप्त करेंगे। आपके कई पक्के मित्र होंगे जो मुश्किलों में आपका साथ देंगे

मानसिक खूबियां

आपमें दर्शन तथा धर्म का सार प्राप्त करने की प्रबल इच्छा है। आपको विश्लेषणात्मक विज्ञान की जटिलता में कोई रुचि नही है। जानकारी के भंडार बनने की बजाय आप किसी भी स्थिति का सटीक आंकलन करने की क्षमता विकसित करेंगे। आप न्यायप्रिय, उदार, विशाल हृदय के और शांत स्वभाव के हैं।

शारीरिक सरंचना

आपकी जन्मकुन्डली के अनुसार आप लंबे, सीधे और स्वस्थ शरीर के स्वामी हैं। आपका चेहरा लंबा, गोल माथा एवं हलके रंग की भावपूर्ण आंखे होंगी। आपका रंग गोरा होगा और कनपटी के पास बाल कम होगे। आपका शरीर कसरती होगा व आपको खेल या अन्य शारीरिक श्रम से भरे कार्य करना पसंद होगा।

स्वास्थ

आपकी सूर्य राशि आपके लिम्फैटिक सिस्टम, पीयूष ग्रंथि, पैर और पैरों की उंगलियों को प्रभावित कर रही है। जिसके कारण इन अंगों से सम्बन्धित रोग से आप परेशान हो सकते हैं। आप चिलब्लैन्स, और जोड़ों के दर्द से भी पीड़ित हो सकते हैं।

इस स्थिति में आपको अपने पैरों का विशेष ख्याल रखना चाहिए, इसके लिए आप आरामदेय और सही आकार के जूते पहनें।

प्राकृतिक और हर्बल चिकित्सा आपके लिए विशेष लाभदायक होगा। खाने में अत्यधिक तला–भुना एवं मसालेदार भोज्य पदार्थों से परहेज रखें। पोषक तत्व जैसे काजू, किशमिश,खजूर,जायफल,सौंफ आदि का सेवन आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम होगा। आपकी कुन्डली का लग्न भाव बुध से दूषित है। आपकी स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती हैं।

आपकी कुन्डली में चंद्र किसी भी प्रकार से दूषित नही है इसलिये आपको पर्यावरण के कारण होने वाले रोग होने की संभावना बहुत कम है।आपकी कुन्डली में शनि से सूर्य दूषित होता है इसलिये आपको सर्दी, कब्ज़ जैसी सामान्य बीमारियां तथा कमज़ोरी हो सकती है।आपकी कुन्डली में सूर्य नेपच्युन से दूषित हो रहा है इसलिये आपको जानवर या कीड़े के काटने से होने वाली बीमारीयां हो सकती हैं।आपकी कुन्डली में वृश्चिक राशि को शनि और मंगल दोनो दूषित कर रहे है। आप जनेन्द्रियॉ एवं मल उत्सर्जन तंत्र से सम्बन्धित रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आपकी कुन्डली में मीन राशि को शनि और मंगल दोनो ही दूषित कर रहे है। आपके घुटनों के नीचे पिण्डलियों में तकलीफ रह सकती है।

शिक्षा एवं जीविका

आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी और आप अपनी बुद्धिमता से किसी भी विषय को आसानी से समझ लेते हैं। आपकी शैक्षणिक स्थिति उच्च स्तर की होगी आप कम से कम स्नातक की उपाधि अवश्य प्राप्त करेंगे। आप किसी विषय में व्यवसायिक अथवा विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। आप उस क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे जिस में विशिष्ट योग्यता की जरुरत होगी, न कि केवल शिक्षा की।

आपकी कुन्डली में विद्यमान ग्रहयोग आपको जन्मजात व्यापारी के गुण प्रदान करते हैं। आप व्यापार की बारीकियॉ जल्दी सीख जायेंगे। आप व्यापार और उत्पादन के क्षेत्र से अच्छी कमाई करेंगे, परंतु आपको व्यापार में आने वाली मंदी का सामना करना पडेगा उस समय आपको अपने पर नियंत्रण रखना होगा। लेकिन आम तौर पर आपका व्यापार अच्छा चलेगा।

संपत्ति व उत्तराधिकार

परिवार–संपत्ति की दृष्टि से यह ग्रहस्थिति धनभाव के स्वामी के लिये अत्यंत शुभ है आपकी स्थिति इर्ष्या करने योग्य होगी। आप सफल भागीदारी करेंगे। आप जनसंपर्क के कार्य में बहुत कुशल होंगे। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय होगा। आपकी संतानों में बेटियॉ आपके गौरव और आनंद का कारण बनेंगी।

आपकी कुन्डली में लाभ भाव का स्वामी अनुकूल सातवें भाव में है जहाँ से यह लग्न भाव में दृष्टि डालता है। आपको हर प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे। आपको दूर के प्रदेश और विदेश में व्यापार से लाभ होगा। आपको ठेकेदारी से बडा धन लाभ हो सकता है। आपको भगीदारी से दूर रहना चाहिए क्योंकि आपके मित्र ही आपके दुश्मन बन सकते हैं।

आपकी कुन्डली में विरासत का स्वामी लग्न भाव में स्थित है। यह विरासत के लिये शुभ है। आपको अपने माता पिता और जीवनसाथी की तरफ से संपत्ति मिलेगी। आपके साथ कभी अचानक कोई दुर्घटना हो सकती है जिसमे आपके सिर में चोट लगने की संभावना है।

विवाह एवं वैवाहिक जीवन

आपकी जन्म कुन्डली बताती है की आपकी शादी बहुत जल्दी होगी। हो सकता है कि आपकी शादी बाल्यावस्था या उसको पार करते ही हो जाये। आपकी कुन्डली में लग्न भाव और सप्तम भाव का स्वामी समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध में है। आप दोनो कभी–कभी एकदूसरे के साथ असहमती जतायेंगे। आप अगर प्रेमभरा और समझौते वाला व्यवहार रखेंगे तो सम्बन्धों में सहजता आ सकती है और आप एकदूसरे को पसंद करेंगे।

यात्रा एवं भ्रमण

आपकी कुन्डली में अधिकतर ग्रह स्थिर राशियों में है। आप शायद ही लंबी यात्रा करेंगे। आपको अपने व्यवसाय की जगह बदलने की जरुरत नहीं पड़ेगी।

शुभ रत्न

सारे शुभ रत्नों में नीलम आपके लिये सबसे अनुकूल रहेगा।

आपको ४ से ७ रत्ती का नीलम सोने की अंगुठी में दायें हाथ की मध्यमा उंगली में शनिवार को धारण करना चाहिए।

नीलम का सस्ता उपरत्न लाजवर्त अथवा अम्बर को सोने अथवा पंच धातु की अंगूठी में या लोहे की अंगूठी में पहनना चाहिए।

रत्न पहनते हुये नीचे दिये गये मंत्र का जाप करें।
" नीलांजनं समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजं
छायामार्तण्ड समभूतम तम नमामि शनैश्चरम।"

रत्नों का ऊपर दिया गया वज़न १८ साल से ऊपर के पुरुषों के लिये है। स्त्रियों के लिये यह वज़न ३/४ से १/२ तक और छोटे बच्चो के लिये १/२ से १/४ भाग का रहेगा।

ग्रहों की स्थिती का फल

लग्न फल

आपका जन्म कुंभ लग्न में हुआ है. आपका लग्न स्वामी सॅटर्न है. यह आपके लिए शुभ फलदायक है. शनि एंगल और ट्राइन का भी स्वामी है. अतः आपकी राशी में वीनस योग कारक है. यह आपके लिए अति उत्तम है

कुंभ लग्न में जन्में होने के कारण आपके विचार स्थिर होंगें और विश्वास भी मज़बूत रहेगा. आपके आदर्श ऊंचे होंगे और आपमें सहयोग की भावना होगी. हालांकि आपमें आत्मविश्वास की थोड़ी कमी होगी पर अपने इंटलएक्चुअल मामलो में आप पूरी तरह लॉजीकल रहेंगे. आप पूर्वज्ञान रखनेवाले होंगे. आपका नज़रिया एक खोजी का नज़रिया होगा. आप अपनी अच्छी समझ, व्यव्हारिक योग्यताओं और कारोबार के लिए यश प्राप्त करेंगे. आप अधिकतर कुछ तथा खोजेंगे और अपने क्षेत्र या व्यापार में ली गई आपकी खास दिलचस्पी आपके समकालीनों को पीछे छोड़ देगी. आपका सामाजिक दायरा काफी विशाल होगा तथा आप अपने संपर्क में आनेवाले लोगों के लिए काफी शुभ रहेंगे. अपनी सज्जनता और अच्छे स्वभाव से आप लोगों का सम्मान प्राप्त करेंगे. यदि किसी प्रकार से आपका शनि कमजोर या पीड़ित है और आपका योग कारक ग्रह वीनस पीड़ित है तो आप विश्वासपात्र नहीं होंगे क्योंकि आप झूठ, पाखंड, तिकड़म और छल अपनायेंगे. आप पाप और दुष्कर्मों में लीन हो सकते हैं.

राशियों में ग्रहों की स्थिति का फल

रवि

आपके चार्ट में सूर्य स्थित है, कुंभ राशी में. आपकी राशी का लग्न–स्वामी सेटर्न है. तबतब आपका लग्न स्वामी सेटर्न आपकी कुंडली में जम नहीं जाता, मज़बूत नहीं हो जाता, तब तक आप बीमारियों से परेशान हो सकते हैं. आपको अपने जीवन में कुछ समय के लिए हृदय–संबधी बीमारी हो सकती है. इन बीमारियों से बचने के लिए आपको दवाईयां लेनी पड़ेंगी आपका बिहेवियर लोगों से अच्छा रहेगा. आप छल, कपट और बेईमानी आदी से दूर रहेंगे. अलबत्ता आपके अंदर एक कमी होगी. आपके अंदर कही न कही अभिमान और शोशेबाजी होगी. आप आडम्बर, फालतू दिखावे और डींगें हांकने की शौकीन होंगे. आपको अपनी बेकार और अनचाही आदतों पर रोक लगानी चाहिए. कही यह सब चीज़ें आपको महंगी न पड़ जाएं वरना आपको अपने लोगों से लड़ झगड़कर अलग होना पड़ेगा. जिनमें आपके भाई–बन्धु, दोस्त और पत्नी तक हो सकती है

बुध

आपकी कुंडली में मरक्युरि अर्थात बुध ग्रह कुंभ राशि में स्थित है. इस राशी का लग्न–स्वामी सॅटर्न यानि शनि है. जब तक आपका सॅटर्न अच्छे स्वभाव का नहीं होगा तब तक आप बुरे कार्य करेंगे. आप कर्जदार हो जायेंगे और आपके अपने भाई–बंधु वगैरह आपके लिए मुसीबतें पैदा करेंगे. शायद आप बहुत ज्यादा ज़रुरतमंद और दरिद्र बन जायेंगे. अप खुद को छला हुआ महसूस करेंगे. हो सकता है कि आप किसी दूर–दराज़ स्थान पर चले जाए. अगर किसी तरह से जुपीटर ग्रह मरक्युरी ग्रह के संयोजन में आ जाता है या इसके प्रभाव में आ जाता है तो स्थिति में बेहतरी के लिए सुधार होगा. तब आप आविष्कारी और होनहार होंगे. आपमें इंसानियत कूट–कूटकर भरी होगी. आपको गंभीर विद्या से लगाव होगा आपका स्वभाव उपकारी और दयालू होगा. आपमें कई तरह की खूबियां होंगी और आपको उचित समय पर उचित सम्मान प्राप्त होंगे.

शुक्र

आपकी कुंडली में वीनस मेष राशी में स्थित है. जब तक चन्द्र सेक्सटाईल में नहीं होता या फिर जूपीटर सेक्सटाईल में नहीं आता या फिर तीनों कोणो का प्रभाव नहीं होगा तब तक अपकी स्थिति बेहतर नहीं होगी. आप दिमागी रूप से अस्थायी रहेंगे. आप हमेशा हलचल सी महसूस करेंगे. हो सकता है कि आप बिना किसी वजह के भटकते रहे. आप अर्धम के काम कर सकते हैं. आपकी खुशियों में कमी रहेगी. यदि किसी तरह से चन्द्र या जूपीटर, वीनस को प्रभाव में करता है तो निश्चित रूप से स्थित में सुचार होगा. आप व्यापार द्वारा धन अर्जित करेंगे तथा एक सुखी, आरामदायक जीवन बिताएगे.

मंगल

आपकी कुंडली में मार्स यानि मंगल ग्रह, सिंह राशी में है. यह वाकई में एक सहायक स्थिति है और आप भाग्यशाली रहेंगे. यह आपको चमकीला रंग–रूप प्रदान करेगी. आपका शरीर बलवान होगा और आप खुश मिज़ाज रहेंगे. जीवन के प्रति आपका नज़रिया आशावादी होगा. आप हमेशा किसी न किसी कार्य में सक्रिय रहेंगे. इसके अलावा कोई भी चुनौती स्वीकार करने के लिए आप हमेशा तैयार रहेंगे. आप खेलो में भाग लेंगे और आप अक्सर आनंददायक यात्रा करेंगे. आपमें बहुत कशिश होगी. आप हमेशा विपरीत लिंग को अपनी ओर आकर्षित करेन में सफल रहेंगे. अलबत्ता आपको हमेशा किसी भी प्रकार से शारीरिक हानी पहुंचने का खतरा रहेगा. अगर आपका लग्न मकर है तो आपकी पत्नी की सेहत पर ध्यान देने की जरूरत होगी.

गुरु

आपकी कुंडली में ज्युपीटर अर्थात गुरु ग्रह, सिंह राशी में स्थित है यह एक भाग्यशाली संकेत है. आप एक कुलीन और महानुभाव मनुष्य बनेंगे. आपके सपने ऊंचे होंगे. आप उद्योगी, साहसी और गर्वीले बनेंगे. आप बातो की कला में भी माहिर होंगे, अर्थात आप वाकपटु होंगे. आपकी इच्छा हमेशा मान–सम्मान प्राप्त करने की रहेगी और आप काफी बुद्धिमानी के साथ इस दिशा में आगे बढ़ते ही जायेंगे. आप धन प्राप्त करेंगे. आप कुछ प्रशंसनीय कार्य भी करेंगे, जिसके बदले आपको मान–सम्मान प्राप्त होगा. आप अपने साथ जन्में लोगों के साथ, अपनी पत्नी के साथ और अपनी संतान के साथ, मिलकर जीवन का आनन्द उठायेंगे.

शनि

आपकी कुंडली में सैटर्न अर्थात शनि ग्रह कन्या राशी में स्थित है. आपको भूमी–विकास या फिर खेती–बाड़ी से अच्छा लाभ मिलने की संभावना है. अगर आपकी राशी में मरक्यूरी मज़बूती से जमा हुई है या फिर इस पर वीनस का प्रभाव पड़ रहा है तो आप एक ज्ञानी व्यक्ति और बहुत माननीय व्यक्ति के रूप में जाने जायेंगे. आप एक ऊंचे, जिम्मेदार और विश्वासपात्र ओहदे पर बिठाए जायेंगे. आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर रहेगा. आप पवित्र आत्माओं, साधु, संतो और धर्मगुरुओं को अति मान–सम्मान देंगे. आपकी संतानो में बेटियों की संख्या होगी, जो आपका सिर गर्व से ऊंचा उठाएंगी. आप उनकी सौम्यता और शोभा से हमेशा आनन्दित और गर्वीले रहेंगे.

चन्द्र

आपके चार्ट में चन्द्र धनु राशी में स्थित है अतः आपकी जन्मराशी धनु है. आपके मानसिक अवस्थाऐं और चरित्र के कुछ अन्य गुण इस नर, फायरी, फलदायक, और सामान्य राशी से प्रभावित रहेंगे. इस राशी का स्वामी जूपीटर है. आप पर एक हद तक जूपीटर क भी प्रभाव रहेगा.

आपका चन्द्रमा धनु राशी में है. यह योग इंसान के जीवन में कई बदलाव हाता है. इनमें से ज्यादातर बदलाव अच्छे होते हैं. हालांकि इस कारण से आप अपने पुरखों की दौलत गंवा देंगे मगर आपकी अपनी कमाई खूब होगी. आप स्वयं ढेर सी दौलत कमायेंगे. आपको ज़रुरत से ज्यादा ही मिलेगा और वह भी बेहद कम समय के अंदर रहकर मिलेगा. आप सनकी और जल्दबाज़ होंगे. इसके साथ–साथ आपमे सज्जनता और माफ करनेवाला गुण भी होगा. आप दूर–दराज़ के स्थानों की यात्रा करेंगे. हो सकता है की आप विदेश यात्रा भी करें. आप अपने कई दोस्त बना लेंगे. आप मददगार होंगे. आपके सपने ऊंचे होंगे. इसके अलावा आपका नज़रिया हमेशा एक आशावादी का बना रहेगा. आप कभी जीवन से निराश नहीं होंगे. आपको अपने संगी–साथियों द्वारा मान–सम्मान मिलेगा. आप बिना किसी खालिश के अपने क्रियाशील जीवन का आनन्द उठाएगे. आपको अधिकार प्राप्त होंगे तथा आप अपने जीवन में भारी लाभ उठाएंगे.

राहु

आपकी कुंडली में राहु, सिंह राशी में मौजूद है. अगर सूर्य मज़बूती से स्थित है तो आप एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक बनेंगे. आपको अधिकारियों और सरकार द्वारा बहुत से लाभ प्राप्त होंगे. अगर मरक्यूरी या वीनस या मार्स अपने घर में है तो इससे आप खुशहाल और भाग्यशाली बनेंगे. अगर आपका लग्न कुंभ है तो आपको अपनी पत्नी की सेहत पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत होगी. अगर राहु, माघ नक्षत्र में स्थित है. (और केतू शतभिषा नक्षत्र में स्थित है) तो आपकी किसी दुर्घटना से पीड़ित होने की संभावना है.

केतु

आपकी कुंडली में केतू, कुंभ राशी में स्थित है. अगर सैटर्न सही ढंग से स्थित है, तो यह आपको एक प्रभावशाली व्यक्तित्व देगा और आपको सरकारी ऑथोरीटी से बहुत से लाभ प्राप्त होंगे. यदि मरक्यूरी या वीनस या मार्स अपने स्वयं के घर में है तो इससे आप भाग्यशाली और सुखी बनेंगे. अगर आपका लग्न कुंभ है और सूर्य शुभ ग्रह के समागम में नहीं है और न प्रभाव में है तो आपकी पत्नी की सेहत पर शायद ध्यान देने की जरूरत पड़ेगी. इसके साथ आपके अपनी पत्नी के साथ कुछ मतभेद भी होंगे. अगर केतू, शतभिषा नक्षत्र में स्थित है. (इस बीच राहु, मेघा नक्षत्र में मौजूद है) तो आपको किसी अभाग्यशाली दुर्घटना से ग्रस्त होने का खतरा रहेगा.

इन्द्र

आपकी कुंडली में युरेनस, वृश्चिक राशी में मौजूद है. आप अपनी ही तरह के एक विद्रोही होंगे. आप बगावत करेंगे और पूराने तथा दकियानुसी धार्मिक विचारों के लिए आपके मन में कोई भावना कोई प्रशंसा नहीं रहेगी. आपको अपनी प्रेमकहानी में अजीब तजुर्बे मिल सकते हैं और कुछ समय के लिए जीवन में आपका नज़रिया पूरी तरह से बदल जाएगा. अगर मार्स सही स्थिती में है तो आप सुरुचिपूर्ण बनेंगे और आप शरीर स्वच्छ और सुन्दर रखने का प्रयास करेंगे. मगर वीनस पीड़ित है तो शायद मैले–कुचैले से रहेंगे और साफ–सफाई के मामले में लापरवाही बरतेंगे.

वरुण

आपकी कुंडली में नेपचून वृश्चिक राशी में मौजूद है. अगर नेपचून, ज्यूपीटर या वीनस के समागम में है या प्रभाव में है तो आपकी छठी इन्द्रीय (या साईकिक योग्यता) सक्रिय बनेगी और आपमें दैविक योग्यता होगी. आप भविष्य के बारे में जान लेने में सक्षम होंगे. अगर नेपचून किसी अशुभ ग्रह से पीड़ित है तो आपके नाक–नक्श भद्दे होंगे. साथ ही आपकी काम भावनायें भी तीव्र होंगी.

रुद्र

आपकी कुंडली में प्लुटो, तुला राशी में मौजूद है. यह एक भाग्यशाली स्थिती है. इससे आप सहारा देनेवाले बनेंगे, अच्छे स्वभाव वाले एक संतुलित इंसान बनेंगे. आप किसी भी चीज का निर्णय न्यायपूर्ण तरीके से करने में सक्षम होंगे तथ आप हमेशा अन्य लोगों की सहायता करने के तत्पर रहेंगे, आपके ये गुण लोगों में आपको अलग मान–सम्मान दिलाएंगे. आपमें जनता और समाजसेवा में भाग लेने की दिलचस्पी काफी कुछ हो सकती है. आपके इस कार्यों में आपकी पत्नि न सिर्फ आपको सहयोग करेंगे बल्कि स्वयं में सक्रिय रूप से आपकी सहायता करेंगी.

भाव फल

लग्नपति

आपकी कुंडली में लग्न स्वामी आठवें घर में स्थित है जिसे आयुष का घर भी कहा जाता है. इसके अलावा यह पैतृक संपत्ति को भी शासित करता है. जहां तक महिलाओं का सवाल है तो उनके विषय में यह शुभ विवाह या मंगल पर शासन करता है अगर यह घर किसी तरह से पीड़ित है तो इससे जो परिणाम प्राप्त होंगे, वे कुछ ऐसे होंगे–अंधेरा, गंदगी, अशुद्धता, अफवाहें, अपमान धोखा, हार आदि. अगर आपकी कुंडली में कोई बेहतर और आशाजनक प्रभाव उत्पन्न नहीं होता है तो आपको एक या उससे ज़्यादा कारणों से कष्ट झेलने पडेगे. अगर आपका लग्न मेष, तुला, या धनु है तो आप आठवें घर के कुप्रभावों से छुटकारा पा सकते है तब आप आठवें घर के विषय में भाग्यशाली साबित होंगे क्योंकि उस दशा में आपका लग्नस्वामी अपने घर में स्थित होगा या फिर शक्तिशाली हो जाएगा. इससे शुभ योग बनेगा और इससे आप पैतृक संपत्तिादि के विषयों में भाग्यशाली बनेंगे और आपको किसी आर्थिक संस्थान से भारी मात्रा में लोन प्राप्त होगा वरना यह स्थिती कोई खास अनुकूल नहीं है अगर मार्स या केतू भी आठवें घर पर लग्नस्वामी के साथ स्थित है तो कष्टों अभाग्यकारी दुर्घटनाओं और सर्जिकल ऑपरेशन वगैरह से दो–चार होने की संभावनायें प्रबल हो जाएगी. इसके अलावा आपको गुंडे–बदमाशों का भी भय बना रहेगा. आपको किसी भी कीमत पर स्वयं को किसी अभियोग या मुकदमे आदि से बचाने का प्रयास करना चाहिए. अगर कोई प्राकृतिक शुभ ग्रह स्थित है या प्रभाव में है तो हालात में काफी सुधार हो सकते है.

द्वितीय भाव

आपकी कुंडली में द्वितीय स्वामी सांतवे घर में स्थित है जिसे कलत्र का गृह कहते है. हालांकि द्वितीय स्वामी आपके लग्न को प्रभावित कर रहा है. जिससे आप अपने आर्थिक पक्षों में भाग्यशाली बनेंगे मगर यह आपके सेहत पक्ष में कतई अनुकूल नहीं है क्योंकि "मारक–स्वामी" अन्य "मारक गृह" में स्थित है. इसके अलावा आपकी पत्नी कि सेहत और कुशलता पर ध्यान देने की ज़रूरत होगी. आपके परिवार के सदस्यों के बीच कुछ मतभेद हो सकते है और शायद आपके परिवार के कुछ लोग आपका विरोध करेंगे आपको सार्वजनिक सौदेबाजी में महारत हासिल होगी और आप एक योग्य व्यापारी के रूप में नाम कमायेंगे. आपको विदेश व्यापार से अच्छी आमदनी होगी, जो कि शायद ज़्यादा दिन तक नहीं चलेगा. आपको अपने भागीदार का सहायक चुनते समय बहुत ज़्यादा सावधानी से काम लेना चाहिए–क्योंकि उनमें से कुछ शायद अचानक गायब हो जायेंगे. वे अपने निवास स्थान आदि की कोई भी सूचना छोड़कर नहीं जायेंगे. यदि लग्न स्वामी या प्राकृतिक शुभ ग्रह लग्न में स्थित है या प्रभाव दे रहा है तो स्थिती में बेहतर के लिए सुधार आएगा. अगर शुभ ग्रह के स्थान पर प्राकृतिक अशुभ ग्रह होगा तो आपकी सेहत बुरी तरह प्रभावित होगी.

तृतीय भाव

आपकी कुंडली में तीसरा स्वामी सांतवे घर में स्थित है जो कि कलात्र (पति का पत्नी) का घर या गृह कहलाता है. आपका स्वभाव कुछ ज़्यादा ही उग्र किस्म का हो सकता है और विपरीत लिंग के सदस्यों की संगत के प्रति आपके मन में गहरी इच्छा रहेगी. आपकी पत्नी शायद आपके किसी रिश्तेदार की रिश्तेदार होगी या फिर आपके किसी जान पहचान के पड़ोसी वगैरह से संबंधित होगी. अगर कोई प्राकृतिक शुभ ग्रह सांतवे घर में स्थित है या प्रभाव दे रहा है तो आप छोटे भाई–बंधु से बहुत सहायता प्राप्त करेंगे. अगर योग के अंदर सांतवा स्वामी भी भली प्रकार स्थित है तब शायद आप अपने छोटे भाई वगैरह के साथ भागीदारी में कोई व्यापार चलायेंगे या फिर अपने किसी पड़ोस में

रहनेवाले जान–पहचान के जन के साथ भागीदारी में कोई कार्य करेंगे. यदि प्राकृतिक शुभ ग्रह तीसरे घर में स्थित है या प्रभाव दे रहा है, तब आप शायद छपाई के व्यापार में जायेंगे और आपकी अपनी छपाई मशीन होगी. मगर यदि प्रकृतिक अशुभ ग्रह सांतवे घर में स्थित है या प्रभाव दे रहा है तो आपके छोटे सहोदर शायद आपके लिए ज़्यादा मददगार साबित नहीं होंगे. अगर योग में सांतवां स्वामी भी भली प्रकार स्थित नहीं है तो शायद आपके अपने भागीदारों के साथ झगड़े होंगे और आपको अपने रिश्तेदारों और पडोसियों का विरोध सहना पड़ेगा. यदि आपका लग्न मकर है तो तीसरा स्वामी ज्यूपीटर सांतवे घर में शक्तिशाली हो जाएगा और लग्न को प्रभाव देगा. तब आपका लग्न तीसरा गृह और ग्यारहवां गृह, आपको धनवान बना देगा.

चतुर्थ भाव

आपकी कुंडली में चतुर्थ स्वामी तीसरे घर में स्थित है, जो कि विक्रम का घर कहलाता है यह स्थिती बहुत ज़्यादा उपयुक्त नहीं है और इससे आपको मिलजुले प्रभाव प्राप्त होंगे. अगर चन्द्रमा सही ढंग से स्थित नहीं है तो शायद आपकी माताजी के सेहत अच्छी नहीं रहेगी. अगर मार्स सही ढंग से स्थित नहीं है तो शायद आप अपनी जागीर के कुछ भाग खो बैठेंगे. यदि किसी प्रकार से प्राकृतिक शुभ ग्रह चौथे घर में स्थित है या फिर इसे प्रभाव दे रहा है तो फिर हालातों में उटलेखनीय रूप से सुधार आयेंगे. अगर चतुर्थ लग्न प्राकृतिक शुभ ग्रह है तो यह आपको आपके युवा सहोदर के विषय में भाग्यशाली बनाएगा. मगर यदि आपका चतुर्थ लग्न, प्राकृतिक अशुभ ग्रह है तो परिणाम बिल्कुल विपरीत होंगे. वैसे इससे आप साहसी और सक्रिय व्यक्ति बनेंगे. अगर प्राकृतिक शुभ ग्रह तीसरे घर में स्थित है या प्रभाव में है तो आप शांति और संतुष्टी प्राप्त करेंगे. इसके अलावा आप अपने रिश्तेदारों , भाई बंधु और पड़ोसियों से सहारे और सहायता भी प्राप्त करेंगे. मगर यदि यह किसी प्राकृतिक अशुभ ग्रह के प्रभाव में है तो शायद आपके पास अमन और संतोष नहीं होगा. तीसरे घर में स्थित चौथा स्वामी अक्सर कम दूरी वाली, इधर–उधर कि यात्रायें देगा. इसीलिए आपका कार्यक्षेत्र कहीं न कहीं शायद पर्यटन से जुड़ा हुआ रहेगा और शायद आप पर्यटन परिवहन, क्रय–विक्रय आदी क्षेत्रों में अपना बेहतर प्रदर्शित करेंगे. चौथे घर किताबों की ओर संकेत करता है जबकि तीसरा छपाई की ओर इशारा करता है अतः हो सकता है कि आपकी अपनी एक प्रेस होगी. आपकी कुंडली में चतुर्थ स्वामी तीसरे घर में स्थित है, जो कि विक्रम का घर कहलाता है यह स्थिती बहुत ज़्यादा उपयुक्त नहीं है और इससे आपको मिलजुले प्रभाव प्राप्त होंगे. अगर चन्द्रमा सही ढंग से स्थित नहीं है तो शायद आपकी माताजी के सेहत अच्छी नहीं रहेगी. अगर मार्स सही ढंग से स्थित नहीं है तो शायद आप अपनी जागीर के कुछ भाग खो बैठेंगे. यदि किसी प्रकार से प्राकृतिक शुभ ग्रह चौथे घर में स्थित है या फिर इसे प्रभाव दे रहा है तो फिर हालातों में उटलेखनीय रूप से सुधार आयेंगे. अगर चतुर्थ लग्न प्राकृतिक शुभ ग्रह है तो यह आपको आपके युवा सहोदर के विषय में भाग्यशाली बनाएगा. मगर यदि आपका चतुर्थ लग्न, प्राकृतिक अशुभ ग्रह है तो परिणाम बिल्कुल विपरीत होंगे. वैसे इससे आप साहसी और सक्रिय व्यक्ति बनेंगे. अगर प्राकृतिक शुभ ग्रह तीसरे घर में स्थित है या प्रभाव में है तो आप शांति और संतुष्टी प्राप्त करेंगे. इसके अलावा आप अपने रिश्तेदारों , भाई बंधु और पड़ोसियों से सहारे और सहायता भी प्राप्त करेंगे. मगर यदि यह किसी प्राकृतिक अशुभ ग्रह के प्रभाव में है तो शायद आपके पास अमन और संतोष नहीं होगा. तीसरे घर में स्थित चौथा स्वामी अक्सर कम दूरी वाली, इधर–उधर कि यात्रायें देगा. इसीलिए आपका कार्यक्षेत्र कहीं न कहीं शायद पर्यटन से जुड़ा हुआ रहेगा और शायद आप पर्यटन परिवहन, क्रय–विक्रय आदी क्षेत्रों में अपना बेहतर प्रदर्शित करेंगे. चौथे घर किताबों की ओर संकेत करता है जबकि तीसरा छपाई की ओर इशारा करता है अतः हो सकता है कि आपकी अपनी एक प्रेस होगी.

पंचम भाव

आपकी कुंडली में पाचवां स्वामी लग्न में स्थित है इसे तनु गृह कहा जाता है. पाचवां स्वामी पूर्व–पून्य,

योग्यता, बुद्धि, पद, सगी संतान, नाना या दादा आदी का संकेत देता है. आप इन सभी विषयों में बहुत भाग्यशाली बनेंगे. आप बुद्धिमान और योग्य बनेंगे आप अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे और आपको सम्मानजनक ओहदा प्राप्त होगा. आपके सर्विस में होने की संभावनायें ज़्यादा है यदि सूर्य सही तरह से स्थित है तो ज़्यादा अच्छे परिणामों की आशा की जा सकती है अगर मरक्यूरी भली प्रकार स्थित है तो आपको ऐसे कार्यों में ज़्यादा दिलचस्पी होगी जहां पैसा, पैसा को अपनी ओर खींचता है. और यदि वीनस भली प्रकार स्थित है तो शायद आपको मनोरंजन क्षेत्र अपनी ओर आकर्षित करेगा. अपने बचपन में आप अपने दादा के प्रिय बने रहेंगे और जब आप व्यस्क होंगे तब आपको कर्तव्यनिष्ठ संतान प्राप्त होगी. अगर ज्यूपीटर भली तरीके से स्थित है तो सुखों में इजाफा होगा. यदि आपका लग्न मेष या तुला है तब पांचवा स्वामी लग्न के अंदर शक्ती प्राप्त कर लेगा और आप बहुत ही भाग्यशाली बन जायेंगे. यदि मरक्यूरी भी भली प्रकार स्थित है तो आप बढ़िया शिक्षा प्राप्त करेंगे और आपको छात्रवृत्ति भी मिल सकती है. पर यदि आपका लग्न कर्क है तब पांचवा स्वामी कमज़ोर पड़ जाएगा. हालांकि तब यह स्थिती भौतिक सुख–सुविधायें तो देगी मगर शायद आपको सेहत से संबंधित समस्यायें होगी और आप संतान पक्ष की ओर से भी दुखी से बने रहेंगे. शायद आपको अपना घर छोड़ना पड़ेगा और आप आमदनी के लिए किसी दूर–दराज़ के इलाके में जाकर रहेंगे. शायद कई बार अचानक आपको अपनी नौकरी बदलनी भी पड़ जाएगी.

षष्ठी भाव

आपकी कुंडली में छठा स्वामी ग्यारहवें घर में मौजूद है. इसे लाभगृह कहा जाता है. यह आपकी कुंडली को अपने आप में विशेष बनाता है, हालांकि शायद आपके आसपास आपके कुछ शत्रु, आपके दोस्त के भेष में छिपे रहेंगे, आपको अपने शत्रुओं से भी लाभ मिलेंगे. इसके अलावा आपके रिश्तेदार आपको लाभ देंगे. आप प्रतियोगिताओं में विजय प्राप्त करेंगे. यहां तक कि स्पर्धाओं और चुनावों में भी आप जीत सकते है. शुभ योग में और भी वृद्धी होगी यदि ग्यारहवां स्वामी छठे घर में है तब तो आप अविजित (न हारनेवाले) बन जायेंगे. यदि ज्यूपीटर या वीनस भली तरह स्थित है या वे नक्षत्रों या राशियों के परिवर्तन में सम्मिलित है तब आपके मन में ज़्यादा से ज़्यादा धन संग्रहित करने का लालच बनेगा. धन जमा करने के यह साधन प्रश्न करने योग्य होंगे. शायद आपको अभियोग, मुकदमे वगैरह भी देखने पड़ेंगे, हालांकि इससे आपकी छवि दूषित नहीं होगी क्योंकि आपके खिलाफ गवाहों का अभाव बना रहेगा और आप इस मुकदमे से बाइज्जत बरी हो जायेंगे. इसके अलावा आपको अपनी धर्मपत्नी या व्यापारिक भागीदारी से लाभ मिलेंगे. जैसे कि छठा घर श्रम की ओर संकेत देता है शायद आपको निर्माणकार्यों से लाभ प्राप्त होंगे, यदि सैटर्न भली प्रकार स्थित है या यदि मार्स भली प्रकार स्थित है तब आपको इमारतों आदी के निर्माण से संबंधित कार्यों से लाभ मिलेंगे. जैसा कि छठे भाव का स्वामी बीमारियों पर शासन करता है और ग्यारहवां इलाज पर शासन करता है इससे आपको औषधी कारखाने से या औषधालय आदी में सेवा करके लाभ मिलेंगे. यदि आपका लग्न मेष या तुला है तब छठा स्वामी तीसरा स्वामी भी बन जायेगा और तब शायद आप औषधि प्रतिनिधी (मेडिकल रिप्रेझेन्टेटिव) बनेंगे. इस योग में यदि राहु भी ग्यारहवें घर में स्थित है और या सूर्य छठे घर में है तब आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे.

सप्तम भाव

आपकी कुंडली में सातवां स्वामी लग्न में मौजूद है. इसे तनुगृह (शरीर का घर) कहते है. जैसा की सातवां स्वामी सातवें गृह को प्रभाव देता है. इससे आप सातवें गृह से जुड़े विषयों जैसे वैवाहिक संबंधो, स्वयं का व्यापार, व्यापार सहयोगी आदी के विषयों में भाग्यशाली बनेंगे. इसके अलावा आप (यदि है) सार्वजनिक सौदेबाजियों, ठेकेदारी विदेशी मामलों (यदि योग्य है) या यात्राओं आदी के विषयों में भी भाग्यशाली बनेंगे. यदि लग्न–स्वामी भी सातवें घर में स्थित है तब आप योग्य एडमिनिस्ट्रार बनेंगे और अपनी दूरदर्शिता और योग्य तरकीबों के लिए प्रसिद्धी प्राप्त कर लेंगे.

यदि आपका लग्न कर्क है तब आपका सातवां स्वामी जो है, वह आठवां स्वामी भी बन जाएगा. इसके साथ ही यह सातवें घर पर प्रभाव देगा, तब आपके तथा आपकी पत्नी/पती के स्वास्थ पर कुछ ध्यान देने जरूरत होगी. इसके अलावा यदि मार्स (मंगल ग्रह) आठवें घर में स्थित है या प्रभाव दे रहा है तब आपका मिजाज़ योद्धा किस्म का सा बनेगा और शायद आप अपने जीवन में ऐसी कुछ गतिविधियों में भी सम्मिलित रहेंगे जिनसे आपके लिए हथियारों द्वारा या दुर्घटनाओं द्वारा घायल होने का खतरा भी बना रहेगा. यदि लग्न स्वामी या प्राकृतिक शुभ ग्रह लग्न में मौजूद है या प्रभाव दे रहा है तब आपकी आयु लंबी बनेगी.

यदि आपका लग्न वृषभ या वृश्चिक है, तब शायद आपकी सेहत प्रभावित रहेगी. तब शायद आपको किसी दूर के इलाके में या विदेश जाकर अपने जीवन का लंबा अरसा व्यतीत करना पड़ेगा और वहां पर शायद आपको कुछ नुक्सान भी झेलने पड़ेंगे. मगर क्योंकी सातवां स्वामी, सातवें घर को प्रभाव दे रहा होगा, आप एक बहुत प्रेम करनेवाली/वाले और ध्यान रखनेवाली/वाले पत्नी/पति के विषय में भाग्यशाली बनेंगे, जो की लंबी आयु प्राप्त करेंगी/गें. यदि आपका लग्न सिंह है तब आपका सातवां स्वामी जो है वह आपका छठा स्वामी भी बन जाएगा, इससे शायद उम्र की शुरूआती दौर में आपकी सेहत कुछ नाजुक सी रहेगी. हालांकि आप अपने शुरूआती दिनों में कोई नौकरी करेंगे, मगर बाद में शायद आपका अपना कोई तीव्र गती का व्यापार स्थापित हो जाएगा.

अष्ठम भाव

आपकी कुंडली में आठवां स्वामी लग्न में मौजूद है, जिसे तनुगृह या तनु (शरीर) का घर कहते है. अगर आपका लग्न मेष या तुला में से कोई एक है तब ऐसी स्थिती में आपका आठवां स्वामी जो है वह स्वयं के घर में मौजूद लग्न स्वामी का सा प्रभाव देगा. ऐसे मामलों में आप सामान्यतः सारे विषयो में भाग्यशाली बनेंगे और आपकी आयु खूब लंबी बनेगी. मगर अन्य सभी मामलों में यह स्थिती उत्तम नहीं है. अगर आठवां स्वामी किसी कुदरती अशुभ ग्रह के संयोग में है या असर में है या फिर तीसरा स्वामी जो है, वह आठवें स्वामी से ज़्यादा शक्तिशाली है और सैटर्न भी सही ढंग से स्थित नहीं है, तब आयु और वैवाहिक कुशलता की तरफ से विशेष तौर पर सावधानी बरतने की जरूरत है. इसके बावजूद भी इस स्थिती से आपके किसी दुर्घटना आदी का शिकार बनने की संभावनायें लगभग निश्चित सी है या फिर आपके साथ कोई अन्य कष्टकारी गंभीर दुर्घटना घट सकती है. इस हालात में तब सुधार होंगे, यदि प्राकृतिक शुभ ग्रह आपके लग्न में स्थित है या प्रभाव दे रहा है या यदि आपका लग्न कर्क है क्योंकि तब आपका आठवां स्वामी जो है वह आपका सातवां स्वामी भी बन जाएगा. मगर यदि इस योग में लग्न स्वामी भी आठवें घर में मौजूद है, तब किसी दुखद दुर्घटना का भय बना रहेगा.

नवम भाव

आपकी कुंडली में नवां स्वामी आपके तीसरे घर में स्थित है. इसे विक्रमगृह या विक्रम का घर कहते है. आपका नौवां घर पिता, भाग्य, आदी का संकेत देता है. क्योंकि तीसरे घर से आपका नौवां स्वामी स्वयं के नौवें घर को प्रभाव दे रहा है इससे आप बहुत से विषयों में भाग्यशाली बनेंगे. आपके पिता भली प्रकार से सैटल होंगे और शायद सफलतापूर्वक स्वयं का कोई व्यापार चला रहे होंगे. क्योंकि आपका तीसरा स्वामी जो है वह छपाई पर शासन करता है जबकि आपका नौवां स्वामी प्रकाशन का संकेत देता है. इसीलिए शायद हो सकता है कि आपके पिता कि अपनी प्रिंटिग प्रेस हो या वह समाचार पत्र संस्था के मालिक होंगे या फिर प्रकाशन का कारोबार करते होंगे. वरना शायद इस सब विषयों के साथ आपके संपर्क बनेंगे. जैसा कि आपका तीसरा स्वामी रोड, सड़क, संदेश और यात्राओं आदी के संकेत देता है इस बीच आपका नौवां घर दूर के इलाकों के संकेत देता है. इससे शायद आपका

संपर्क लंबी दूरी के सड़क–परिवहनों या कूरियर सेवा से जुड़ेगा. आपका तीसरा घर छोटी मनसिकता दर्शाता है जबकि नौवां घर आदर्शों पर शासन करता है. अतः यदि आपका लग्न मेष या कर्क है तब तीसरे घर में स्थित आपका नौवां स्वामी ज्यूपीटर आपको एक धार्मिक मानसिकता और ऊंचे आदर्शों वाला इंसान बनाएगा. अगर आपका लग्न सिंह है तब तीसरे घर में मौजूद आपका नौवां स्वामी मार्स आपके छोटे भाई–बहनों को नुक्सान दे सकता है–यदि वीनस भले ढंग से स्थित नहीं है. यदि आपका लग्न वृषभ या मिथुन है तब तीसरे घर में स्थित आपका नौवां स्वामी सैटर्न आपकी माता के स्वास्थ और कुशलता को प्रभावित कर सकता है. यह प्रभाव और भी ज़्यादा होंगे यदि चंद्रमा भी तीसरे घर में है और आपका चौथा स्वामी भली तरह स्थित नहीं है.

दशम भाव

कुंडली में दसवां स्वामी सातवें घर में मौजूद है. इसे कलात्रागृह कहते है. यह संकेत करता है कि आप एक सक्रिय व्यक्ति बनेंगे और अपने कर्मक्षेत्र के विषय में भाग्यशाली रहेंगे. शायद आप अपना व्यापार चलाएगे. या फिर किसी नामी–गिरामी संस्थान में सम्मनजनक ओहदा हासिल करेंगे. यदि आपकी कुंडली में गुरु और वीनस भले ढंग से स्थित है तो शायद आप एक वकील बनेंगे. यदि अपका लग्न मेष है तब आपका जो दसवां स्वामी है वह सातवें घर में शक्ति हासिल कर लेगा तब आप एक नामी प्रोफेशनल या बड़े व्यापारी बन सकते हैं. ऐसे ही परिणाम आपको तब भी मिलेंगे जब यदि आपका लग्न मिथुन या धनु होगा. तब आपका जो दसवां स्वामी है वह आपका सातवां स्वामी भी बन जाएगा. स्वयं के घर में स्थित होने के कारण यह आपको मंगलकारी पांच महापुरूष योग के लाभकारी परिणामों देगा और आप अपने जीवन में भली प्रकार स्थापित हो जायेंगे. शायद आपका जीवनसाथी आप ही के कार्यक्षेत्र से आयेगा. वह आपको दोतरफा प्रेरणा देगा और आपके सपने पूरे करने में सक्रिय रूप से आपको सहयोग देगा. यदि मार्स या सूर्य भी आपके दसवें घर में मौजूद है या फिर शनि या राहु आपके सातवें घर में है तब आप अपने लिए एक शक्तिशाली ओहदा सुरक्षित कर लेंगे क्योंकि तब ग्रह दिशा शक्ति प्राप्त कर लेगा. अगर कोई कुदरती शुभ ग्रह आप दसवें या सातवें घर में है या इन दोनों घर में से किसी एक पर प्रभाव दे रहा है तब आप एक लक्ष्यधारी और प्रशंसायोग्य व्यक्ति बन जायेंगे. आप मानवीय भावनाओं के भली प्रकार समझनेवाले बन जायेंगे और शायद मार्केटिंग के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करेंगे और एक अध्यक्ष के रूप में चमकेंगे.

एकादशम भाव

आपकी कुंडली में ग्यारहवां स्वामी सातवें घर में मौजूद है. इसे कलात्र गृह कहते है. यह एक अति उत्तम स्थिती है इस स्थिती में ग्यारहवां स्वामी आपके लग्न को प्रभाव देता है और इस कारण आप कई कारणों से धन कमाने के विषय में भाग्यशाली बनेंगे. अगर कोई कुदरती शुभ ग्रह ग्यारहवें घर में मौजूद है या इसपर अपना असर दे रहा है तब आपका जीवनसाथी आपको अपने जीवन से भी ज़्यादा समझेगा और प्रेम करेगा. आपका जीवनसाथी धनवान घराने से आएगा और उसकी आय का एक स्थिर स्त्रोत होगा और अपने इस आयस्त्रोत से वह आपके परिवार को अपना जीवनस्तर ऊंचा बनाए रखने में थोड़ी–बहुत सहायता देता रहेगा. मगर यदि कोई कुदरती अशुभ ग्रह ग्यारहवें में मौजूद है या इसपर असर दे रहा है तब शायद आपको विपरीत परिणाम मिलेंगे. तब आप जीवनसाथी आपका विरोधी बन सकता है. और ऐसा ही कुछ हाल आपके मित्रों का भी होगा. यदि कुदरती अशुभ ग्रह छठे, सातवें या आठवें घर में हैं, तो वैवाहिक जीवन बहुत छोटा होगा. स्थिती में बेहतरी के लिए उल्लेखनीय सुधार तब होंगे अगर ज्युपीटर सातवें घर में हो या इसे प्रभाव दे.

द्वादशम भाव

आपकी कुंडली में बारहवां स्वामी आठवें घर में विराजमान है. इसे आयुषगृह कहते है. भौतिक सुखों की

प्राप्ती के लिए यह एक अच्छा जोड है, क्योंकि एक त्रिका स्वामी का अन्य त्रिकागृह में स्थित होना मंगलकारी विपरीत राज योग का निर्माण करता है. इस योग से आपको अचानक ऐसे कारणों से विशाल धन हासिल होगा जहां से आपने कभी धन पाने की आशा तक नहीं की होगी. मगर यह आपके साथ केवल तब होगा जब आप अपने घर व देश से दूर किसी स्थान पर होंगे. इसके विलक्षण गुण के कारण आपको खतरों से खेनले का शौक बनेगा. आपके जानकारों के समूह में आपके कुछ ऐसे छिपे हुए शत्रू होंगे जो मौका देखते ही आपको नुकसान पहूंचाने की ताक में लगे रहेंगे. आपके अंदर मिलनेवाले अवसरों का सदुपयोग करने की विशेष प्रतिभा होगी मगर शायद अपना मकसद पूरा करने के लिए आप कुछ संदेहजनक राह अपनाएंगे. आपको बड़े खतरे मोल लेने की आदत सी हो जाएगी और इस वजह से आप हमेशा तनावग्रस्त रहेंगे. हालांकि आमतौर पर आपकी सेहत अच्छी बनी रहेगी मगर किसी दुर्घटना के कारण नौबत बिस्तर पकड़ने तक आ सकती है और शायद इससे आपको कुछ अरसा अस्पताल में गुजारना पड़ेगा.
यदि कोई कुदरती शुभ ग्रह आपके बारहवें घर में मौजूद है या इस पर अपना प्रभाव दे रहा है तब शायद आप फिजूलखर्च बन जायेंगे मगर यदि कोई अशुभ ग्रह आपके बारहवें घर में मौजूद है या इस पर अपना प्रभाव दे रहा है तब आपको घाटे उठाने का भय बनेगा.

भावों में ग्रहों की स्थिती का फल

रवि

आपके लग्न में सूर्य स्थित है. इससे आप स्पष्टवादी, फ्रेंक और उपकारी स्वभाव वाले बनेंगे. आप आत्मनिर्भर और स्थिर होंगे. आपको प्रसिद्धि और दिखावे से प्रेम होगा और आप विपक्ष गुटों और दलों को घृणा की नजर से देखेंगे. आपके मॉटिव ऊंचे होंगे और आपको वाह–वाही मिलेगी. आप अपने परिश्रम में सफल रहेंगे तथा लोगों आपके साथ बहुत सम्मानजनक बरताव करेंगे. आप धार्मिक होंगे और छोटे–छोटे बच्चों से आपका खास लगाव होगा. आप अपने पिताजी के ज़्यादा करीब होंगे तथा आप वरिष्ठ लोगों से या अधिकारियों से विशेष सहायता प्राप्त करेंगे और आपको सरकार से या फिर राजनीतिक कारणों से भी बहुत से लाभ मिलेंगे. अगर आप लग्न मेष या सिंह है तो सूर्य अपने घर में काफी शक्तिशाली हो जाएगा. इससे आप योग्य संतान के विषय में काफी भाग्यशाली बन जायेंगे. आपकी पहली संतान लडका यानि बेटा होगा, जो कि आपके परिवार के लिए गर्व का कारण बनेगा. अगर आपका लग्न तुला है तो सूर्य कमज़ोर हो जाएगा इससे आप कोई पुश्तैनि बीमारी से पीड़ित हो सकते है, वरिष्ठ अधिकारियों या सरकारी अधिकारियों आदि के साथ आपकी कोई समस्या हो सकती है और आपको मुकदमे वगैरह का सामना करना पड़ सकता है. अगर सूर्य, राहु या सैटर्न के समागम में है या सैटर्न द्वारा प्रभावित हो रहा है तो आपको अपनी प्रसिद्धि खोने का भी खतरा रहेगा.

बुध

आपके लग्न में मरक्यूरी यानि बुध ग्रह स्थित है. इससे आप आराम न करनेवाले, बैचेन और न रुकनेवाले कौतुहल, जिज्ञासू स्वभाव के मालिक बनेंगे. आप हमेशा नई–नई सूचनाओ के विषय में जानने के लिए जागरुक रहेंगे. आपके पास वाकपटुता का उपहार होगा और आप स्वभाव विनोदी बनेगा. आप अपने जीवन में बहुत सी यात्रायें करेंगे तथा शायद आप कोई ऐसा काम करेंगे, जिसमें लेखन कार्य काफी ज़्यादा होगा. शायद आपको किसी किस्म के साहित्य का भी शौक होगा. अगर मरक्यूरी अपने घर में स्थित है या शक्तिशाली है तो आप अपनी कलम के जादू द्वारा खुद को प्रसिद्ध करेंगे. गर तब आपका लग्न मिथुन या कन्या है तो आप अति भाग्यशाली बनेंगे क्योंकि तब यह

शक्तिशाली होगा या स्वयं के घर में होगा. इससे आपको पांच महापुरूष योग के लाभदायक परिणाम मिलेंगे. यदि आपका लग्न मीन है तब कमज़ोर मरक्यूरि आपके स्वास्थ में समस्याएं पैदा कर सकता है. या फिर आप नर्वस डिसऑर्डर का शिकार हो जायेंगे. इसके अलावा शायद आपको अपने पानी में मिल गए व्यापार को चलाने के लिए भी काफी मेहनत करनी पड़ेगी. या फिर आपको किसी निजी संस्था में कोई विचित्र सा कार्य करना पड़ सकता है अगर ज्यूपीटर इसके साथ है या प्रभाव में है तो आप विद्वान, ज्ञानी, शिक्षित और बुद्धिमान बनेंगे. अगर वीनस साथ में है तो आपको कलात्मकता की ओर झुकाव रहेगा या फिर आपको कुछ विशेष गुण प्राप्त होंगे. अगर राहु साथ में है तो आपके विचार शायद उलझे से रहेंगे मगर यदि केतू साथ है तो आप शायद कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त करेंगे या फिर छोटे कार्यों में सौदेबाजी करके लाभ प्राप्त करेंगे.

शुक्र

वीनस आपके तीसरे घर में स्थित है इस कारण आपका मिजाज़ खुशनुमा बनेगा और आपकी आदत काफी कुछ प्रेम दो और प्रेम लो किस्म की बनेगी आप प्रेम और अपनेपन के विषय में बहुत ज़्यादा भाग्यशाली होंगे. अपने परिवार के सदस्यों के साथ आपके रिश्ते हमेशा सौहार्दपूर्ण बने रहेंगे और आपकी पत्नी आपको अपने जीवन से भी प्यारी रहेगी. आप मिलनसार प्रवृत्ती के होंगे, आपके विचार प्रकाशमय और फलदायक बनेंगे और कला की और आपका गहरा झुकाव बनेगा. शायद आप कविता संगीत गायकी या पेंटीग जैसे कार्यों में थोडी बहुत सफलता प्राप्त करेंगे. आप सुखद पर्यटन का आनंद उठायेंगे. अगर चन्द्रमा लग्न में है या पाचवें घर में स्थित है तो आपके पास एक या एक से ज़्यादा बहुमूल्य गौरवपूर्ण वाहन होंगे. यदि आपका लग्न सिंह है या मकर या मीन है तो वीनस शक्तिशाली हो जाएगी या स्वयं के घर में रहेगी तब आप अपने छोटे भाई–बहनों के विषय में भाग्यशाली बन जायेंगे और शायद आप कलात्मक कार्यों में अच्छी उन्नती करेंगे. यदि प्राकृतिक शुभ ग्रह साथ है या प्रभाव दे रहा है तो और भी ज़्यादा बेहतर परिणाम सामने आयेंगे. अगर यदि आपका लग्न कर्क है तो यह दुर्बल हो जाएगा, तब शायद आपके सामने विपरीत परिणाम आयेंगे जब तक की मरक्यूरी या चन्द्रमा भली प्रकार स्थित नहीं होंगे. अगर आपका लग्न मकर है (इस बीच आपकी चन्द्रराशी वृषभ है या आपका लग्न मीन है और आपकी चन्द्रराशी कर्क है) तब आप धन में लोटपोट होंगे और आपके पास बहुत सारे गौरवपूर्ण वाहन होंगे.

मंगल

क्योंकि मार्स आपके सातवें घर में मौजूद है, अतः इससे उम्र के आरंभिक दौर में आपकी कद–काठी किसी एथलीट समान हृष्ट–पुष्ट होगी. पर बाद में आप गठीले शरीरवाले बन जायेंगे. शायद आपके जीवनसाथी की भी कद–काठी, चेहरा–मोहरा ऐसा ही बनेगा. यदि आपका लग्न कर्क है, तब मार्स शक्ति प्राप्त कर लेगा. अगर आपका लग्न वृषभ या तुला है, तब मार्स स्वयं कि घर में होगा. उपरोक्त सभी विषयों में आप पांच महापुरूष योग के फलदायक परिणामों का आनंद उठायेंगे. इसके साथ ही आप भौतिक सुखों के विषय में भी बहुत भाग्यशाली बनेंगे. अगर आपका लग्न मकर है तो कमज़ोर मार्स शायद आपको वैवाहिक जीवन में कष्टकारी कठिनाईयां देगा या फिर आपको अपने व्यापार में भागीदार द्वारा परेशानियां झेलनी पडेगी. यदि चंद्रमा भले स्वभाव का है या अगर ज्यूपीटर भी सातवें घर में है या इसे प्रभाव दे रहा है तब आप अपनी समस्याओं के हल निकाल लेंगे. मगर यदि कोई प्राकृतिक अशुभ ग्रह आठवें घर में स्थित है, तब शायद आपको अभियोग वगैरह देखने पड़ेंगे या किसी दुर्घटना के कारण आपको चोट पहुंच सकती है या हिंसक लड़ाई झेलनी पडेगी.

सातवें घर में मार्स, बिजली के यंत्रो, रसायनों, रसोइघर से जुड़े सामान, ईंधन, एसिड ओवन आदी के व्यापारों के लिए उपयुक्त है, यह आपको संपत्तित किराए पर उठाने, रियल एस्टेट, होटल आदी कि सौदेबाजी में भी उत्तम लाभ देगा. मगर यदि सैटर्न या राहु भी आपके छठें या सातवें या आठवें घर के

लिए उपयुक्त नहीं है.

गुरु

क्योंकि ज्यूपिटर आपके सातवें घर में मौजूद है, अतः इससे आप बहुत भाग्यशाली बनेंगे. क्योंकि प्राकृतिक शुभ ग्रहों का सबसे उत्तम ग्रह आपके लग्न पर ग्यारहवें घर पर और तीसरे घर पर प्रभाव देगा. आप अपने छोटे भाई–बहनों के विषय में भाग्यशाली बनेंगे और आपका/की जीवनसाथी धार्मिक कार्यों के प्रति सर्मपित होगा. आप भी ईमानदार और धार्मिक व्यक्ति बनेंगे. यदि आपकी कुंडली में कोई दोष नहीं है तब आप लंबी आयुवाले बनेंगे और आपका वैवाहिक जीवन स्थिर और सुखहाल रहेगा. जैसा कि ज्यूपीटर बच्चों की ओर कुदरती रूप से संकेत करता है, अतः आपको कर्तव्यनिष्ठ और योग्य संतान प्राप्त होगी. ज्यूपीटर चूंकि धन–दौलत का संकेतक भी है. ग्यारहवें घर पर इसका प्रभाव होने के कारण आपको अपने कार्य द्वारा (जो शायद व्यापार हो सकता है) स्थिर और बिना रुकावट अच्छी–खासी आमदनी हासिल होगी. अगर आपका लग्न मिथुन या कन्या है तब आप पांच महापुरूष योग के फलदायक परिणामों का लुफ्त उठायेंगे. मगर यदि आपका लग्न कर्क है तब ज्यूपीटर सातवें घर में कमज़ोर बन जाएगा, तब आपको शायद व्यापार में घाटा उठाना पड़ेगा और आप किसी निजी संस्था में नौकरी करेंगे. इसके अलावा आपको कानूनी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा और आपका वैवाहिक जीवन दुखी बन जाएगा. यदि आपका लग्न सिंह है तब शायद आप उच्च रक्तचाप से ग्रस्त बनेंगे. यदि ज्युपीटर, मरक्यूरी के साथ है या इसे प्रभाव दे रहा है तब साहित्य ज्ञान में आपकी रुचि जागृत होगी. अगर यह राहू के नक्षत्र में स्थित है तब आपका नज़रिया परंपराओं सा रूढ़ीवादी नहीं बनेगा.

शनि

सैटर्न आपके आठवें घर में मौजूद है. इससे आपकी सेहत बहुत ज़्यादा उत्तम नहीं रहेगी और शायद आपका वैवाहिक जीवन भी शांतिमय या सुखमय नहीं बनेगा यदि सैटर्न बलशाली या स्वयं के घर में नहीं है. यदि आपका लग्न मिथुन या मीन या कर्क है तब आप अपने जीवन में अच्छी तरह सैटल हो जायेंगे क्योंकि आप लाभदायक विपरीत राजयोग का आनंद उठायेंगे. अगर अन्य प्राकृतिक अशुभ ग्रह इसके साथ स्थित नहीं है या इसपर असर नहीं दे रहा है तो सामान्यतः यह स्थिती लंबी आयु देती है. अगर सूर्य इसके साथ स्थित है तो आपके पिता की शारीरिक या मानसिक सेहत पर कुछ ध्यान देने की जरूरत आन पड़ेगी अगर सूर्य इसके बहुत ही करीब स्थित है तो आप किसी ऐसी व्याधि से पीड़ित होंगे जिसका प्रभाव क्षेत्र आपकी आंखे ओगी और शरीर से निकलनेवाले व्यर्थ पद्धर्थो में रुकावट के कारण आपको अपने जीवन में कुछ समय शरीर के हड्डीयां टुटने का खतरा होगा. यदि मार्स या राहु इसके साथ है या छठें गृह या सातवें गृह में से किसी एक में मौजूद है तब शायद आपका वैवाहिक जीवन ज़्यादा सुखी नहीं बनेगा और आपका जीवन साथी लंबे समय तक जीएगा. अगर ऐसा नहीं होगा, तब शायद वह आपको हमेशा के लिए छोड़ देगा और आपको उसके साथ मुकदमे लड़ने पड़ेंगे. किसी प्रकार से अगर वीनस या मरक्यूरी इसके साथ है तो दशा में सुधार आ सकता है. या फिर ज्यूपीटर इसे प्रभाव देगा तो भी योग उत्तम बनेंगे. अगर आपका लग्न कन्या है तब आप दुर्घटनावश किसी ऊंची जगह से गिरने के कारण बहुत से जख्म प्राप्त करेंगे और यदि मरक्यूरी भी भली प्रकार स्थित नहीं है तब वह जख्म आपके सिर या चेहरे पर होने की संभावनायें ज़्यादा है.

चन्द्र

चंद्रमा आपके ग्यारहवें घर में विराजमान है. आप बहुत लोकप्रिय बनेंगे और आपको सार्वजनिक कारोबार द्वारा उत्तम आमदनी हासिल होगी हालांकि इस चक्र में उतार चढ़ाव आते रहेंगे. आपकी आमदनी में इजाफा होगा यदि चंद्रमा बढ़ रहा है और यदि आपका ग्यारहवां स्वामी भले ढंग से मौजूद

है या कोई कुदरती शुभ ग्रह इसके साथ है या इसपर अपना असर दे रहा है. यदि चंद्रमा घट रहा है और यदि आपका ग्यारहवां स्वामी भली प्रकार स्थित नहीं है या केतू इसके साथ है तब आपकी आमदनी सीमा में होगी. यदि शनि इसके साथ है या इसपर अपना असर कर रहा है तब भी आपको उपरोक्त परिणाम ही मिलेंगे यदि शनि शक्तिशाली है या स्वयं के गृह में है तो यह आपको खेती बाड़ी उद्योग सुरंगो आदी से उत्तम आमदनी देगा. अगर मार्स इसके साथ है तो इससे चंद्र मंगल योग में वृद्धी होगी और इससे आपके पास संपत्ती किराये या रियल इस्टेट जैसे व्यापारों द्वारा धन का प्रवाह होगा. यदि राहु इसके साथ है तो इससे आपको उत्तम आमदनी मिलेगी. यदि आपका लग्न कर्क है तो आपकी आमदनी में भारी उछाल आएगा क्योंकि तब चंद्रमा शक्ति हासिल कर लेगा. अगर आपका लग्न कन्या है तब भी आपको उपरोक्त परिणाम प्राप्त होंगे. क्योंकि तब चंद्रमा स्वयं के घर में स्थित होगा. मगर यदि आपका लग्न मकर है तो ग्यारहवें घर में दुर्बल बन चुका चंद्रमा आपको विश्वास न करने योग्य मित्र देगा और अगर आपकी कुंडली में कोई बेहतर प्रभाव नहीं है तब शायद आपको सम्मानजनक साधनों से अच्छी आमदनी प्राप्त नहीं हो पायेगी. यह स्थिती आपको मित्र तो बहुत सारे देती है मगर लंबे समय तक जुड़े रहनेवाले कुछ ही होते हैं. इस स्थिती से पक्के तौर पर लाभ मिलेंगे और आप महिलाओं को संरक्षण देंगे और शायद आपकी संतानों में कन्या संतानों की संख्या ज़्यादा होगी.

राहु

क्योंकि राहु आपके सातवें घर में स्थित है, अतः इससे आप अच्छे प्रभावों और बुरे प्रभावों, दोनों का मिलता–जुलता आनंद लेंगे. जैसे राहु दिशा शक्ति हासिल कर लेगा, आप सार्वजनिक सौदों के विषय में भाग्यशाली बन जायेंगे और आपको विदेशी व्यापार द्वारा उत्तम लाभ मिलेंगे. विदेशियों के साथ मिलकर कार्य करने के लिए और उनसे तगड़ा मुनाफा पाने के लिए यह स्थिती अति उति उत्तम है. प्रभाव और भी बढ़ेंगे, यदि राहु वृषभ, कन्या या कुंभ राशि में मौजूद है. मगर यह स्थिती आपके जीवनसाथी के स्वास्थ और कुशलता के लिए अच्छी नहीं है यह असर और भी बढ़ेंगे, यदि सैटर्न और/या मार्स भी सातवें, आठवें या छठे घर में मौजूद है. यदि सातवां स्वामी भली तरह स्थित है या कोई कुदरती शुभ ग्रह सातवें या आठवें घर में मौजूद है या प्रभाव दे रहा है, तब परिणामों में उल्लेखनीय तौर से सुधार आयेंगे. मगर यदि आपका लग्न वृषभ है, तब आपको प्रतिरोधियों द्वारा परेशान होना पड़ेगा और बहुत से कष्टों का सामना करना पड़ेगा जब तक मार्स भली प्रकार स्थित नहीं होता. अगर कोई कुदरती शुभ ग्रह राहु के साथ है या इसपर असर दे रहा है तब भी स्थिती में सुधार आयेंगे.

केतु

आपके लग्न में केतू स्थित है. इस कारण आपका जन्म शुभ और सुखद वातावरण में हुआ होगा. शायद आपको अंर्तज्ञान का उपहार मिलेगा या फिर आप बहुत चतुर बनेंगे और आसाधारण रूप से दूर तक की सोचनेवाले होंगे. शायद आपके दिल में निचले तबके के लोगों के लिए हमदर्दी की सच्ची भावनायें होगी और वे आपके साथ सम्मानजनक बरताव करेंगे. आपको धर्म–कर्म और दर्शनशास्त्र से काफी लगाव होगा. यदि केतू अपने नक्षत्र में है या सितारो की अदला बदली में मौजूद है (साथ में प्राकृतिक शुभ ग्रह भी है) तो इससे आपको अपने वैवाहिक जीवन में कुछ असाधारण समस्याएं हो सकती है इन कठिनाइयों कि जड़ खत्म करना काफी मुशकिल होगा. अगर योग में मार्स छठे सातवें या आठवें घर में है और सैटर्न भी साथ में स्थित है तो आपकी पत्नी की सेहत और कुशलता पर ध्यान देने की जरूरत रहेगी. अगर केतू राहु के नक्षत्र में स्थित है तो आप किसी दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं. अगर आपका लग्न वृश्चिक और मार्स साथ में है या चन्द्रमा प्रभाव दे रहा है, या आपका लग्न मीन है और ज्यूपीटर या वीनस के साथ है, या फिर ज्यूपीटर या मरक्यूरी प्रभाव दे रहे हैं, तब आप बहुत धार्मिक हो जायेंगे तथा धार्मिक सत्संगो में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेंगे और सांधू–संतो की संगत का आनंद लेंगे.

आप न सिर्फ स्वयं प्रकाशमय बन जायेंगे बल्की दूसरों को भी प्रकाश दिखाएंगे. अगर मार्स या सैटर्न, केतू के करीब है तो शायद आप पाप करेंगे.

इन्द्र

युरेनस आपके दसवें घर में है. आपकी भौतिकता ही आपकी उल्लेखनीय खूबी बनेगी और शायद आपकी दिलचस्पी विलक्षण कार्यों में रहेगी. अपने माता–पिता अपने भाई–बंधुओं आदी के साथ आपके अजनबी जैसे रिश्ते बनकर रह सकते हैं. अर्थात आप उनके साथ एक दूरी बनाकर रखेंगे. शायद आप में अपने वरिष्ठजनों और नियोजनाओं के साथ कठिनाईयां उत्पन्न करने की आदत होगी और आपकी यह आदत शायद आपके कैरियर में बहुत रुकावटें पैदा करेगी. अगर आप किसी सरकारी सेवा में है या अपना व्यापार चला रहे हैं तो शायद आप जनसाधारण का विरोध सहना पड़ेगा और शायद आपको अपना कार्यक्षेत्र परिवर्तित करने के लिए मजबूर किया जाएगा. हो सकता है कि इनवेस्टमेंट आदी का लोभ आपको सही रास्ते से भटका देगा या फिर आप बिना वजह अपना अच्छा खासा कार्य जल्दी अमीर बनने की लालच में त्याग देंगे. अपनी जल्दबाज़ी में आपका ध्यान अपनी कमियों पर नहीं जायेगा और न आप नए व्यापार में हाथ डालने से पहले अपनी योग्यताओं को तौलकर देखेंगे. अगर देखेंगे तो पाएंगे कि यह कार्य आपके लिए बना ही नहीं यदि गुरु या शुक्र किसी प्रकार से दसवें घर में स्थित हैं या इसपर अपना असर दे रहे हैं तब परिणामों में उल्लेखनीय रूप से सुधार आयेंगे. यदि आपका लग्न कन्या या मीन है तो आप एक साथ दो पदों का भार संभालेंगे. मिसाल के तौर पर यदि आप एक तरफ कही सर्विस कर रहे होंगे तो दूसरी तरफ आपका अपना कोई छोटा–मोटा व्यापार भी होगा आप सलाहकार एंजेट इत्यादी का कार्य भी करेंगे.

वरुण

आपके दसवें घर में है. शायद आपका कैरियर कुछ अजीब सा बनेगा और आपके कैरियर में बहुत से हादसे घटित होंगे. यदि आपकी कुंडली में सूर्य या चंद्रमा भली प्रकार से स्थित नहीं है तो शायद काफी कम उम्र में आप अपने माता या पिता दोनों में से किसी एक से जुदा हो जायेंगे. इससे आपके दिल–ओ–दिमाग में एक सूनापन सा भरा रह जाएगा. यदि मरक्यूरी या वीनस भले स्वभाव के है तो आप कला के क्षेत्र में उत्तम योगदान देंगे और अपने स्वभाव के चलते अधेड़ उम्र में कुछ अजीब वातावरण में सम्मान प्राप्त करेंगे या अपनी कुछ विषेश प्राप्तियों के चलते आपको सम्मान हासिल होगा. कोई विदेश या फिर विदेश में रहनेवाला व्यक्ति, जिससे आपने कभी सहायता की आशा भी नहीं की होगी वह आपको आपके हर कदम पर सहयोग देगा और शायद कोई काल्पनिक विचार या किसी गुप्त साधन को इस्तेमाल करके आप स्वयं के लिए प्रसिद्धि के दरवाजे अचानक खोल लेंगे. अगर जूपीटर इसके साथ है या इसपर प्रभाव दे रहा है तब आप बहुत भाग्यशाली बनेंगे क्योंकि तब आपकी प्राप्त की हुइ शोहरत और दौलत कभी न मिटनेवाले और स्थायी बनेगी मगर यदि कोई वक्री ग्रह इसके साथ है या इसपर प्रभाव दे रहा है तो शायद आपके साथ कुछ ऐसा होगा जैसे की सारे सुंदर सपनों पर पानी फिर जाना या टूट जाना संभव है.

रुद्र

प्लूटो आपके आठवें घर में मौजूद है. आपको खतरनाक तरीकों से अपना जीवन बिताना पसंद होगा और अपने सक्रिय जीवन के दौरान आग से खेलने में आपको विशेष आनंद की प्राप्ती होगी. यदि आप पुरूष है तो यह शौक बढ़ता ही चला जाएगा. आप रोमांचकारी खोजों में सक्रिय रूप से भाग लेंगे और शायद मार्शलआर्ट की सारी कलाए सीखेंगे और उस्ताद बन जायेंगे. यदि कोई कुदरती अशुभ ग्रह इसके साथ है या इसे प्रभाव दे रहा है तब आप शारीरिक संग्रामों में भाग लेंगे और शायद कई बार कानून भी अपने हाथों में लेने का प्रयास करेंगे. अगर आपका आठवां स्वामी भले ढंग से स्थित है और

आपका लग्न स्वामी भी भले स्वभाव का है तब आपकी समय से पहले मृत्यू नहीं होगी. अगर आपका आठवां स्वामी भली प्रकार स्थित नहीं है तब आपके साथ कोई नुक्सानदायक हादसा होगा या फिर किसी दूर के स्थान पर आपके साथ गंभीर दुर्घटना घटेगी मगर यदि प्राकृतिक शुभ ग्रह प्लूटो के साथ है या इसे प्रभाव दे रहा है तब आप इन हादसों से बाहर आ जायेंगे. यदि कोई अन्य अशुभ ग्रह या चंद्रमा आपके प्लूटो के निकट है तब शायद आपकी हिंसक मृत्यू होगी या फिर शायद अपने शत्रुओं के षडयंत्र के तहत या अपनी इच्छानुसार आप अचानक ही गायब हो जायेंगे. यदि आपका दसवां स्वामी भली प्रकार स्थित है और आपका मार्स भी मज़बूत है तब शायद आप फायर–फाईटींग, बम स्क्वाड दस्ता, डिसेसटर मैनेजमेंट आदी जैसे सक्रिय सेवाओं में काम करेंगे, जिसके लिए आपको विशेष सम्मान मिलेंगे.

जन्म नक्षत्र फल

नक्षत्र फल
अधिकांश मूल नक्षत्र जातक स्त्रियाँ पवित्र हृदय होंगी किन्तु आपके जिद्दी होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता छोटी–छोटी बातों पर भी आप अत्यन्त हठ धर्मी हो सकती हैं, चूंकि आपमें लोगों से व्यवहार करने की चतुराई नहीं होती अतः आप कई बार समस्याओं में पड़ जाती हैं.

शारिरिक सरंचना
यदि आप उच्चतापमान वाले देशों में हैं तो आपका रंग मध्यम होगा, आपके सामने के दॉतो के बीच कुछ दूरी हो सकती है, जोकि धन सम्पन्नता का निश्चित संकेत होगा.

शिक्षा
अधिकांश मूल नक्षत्र स्त्रियां उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं करती शैक्षिक कार्यो में आपकी रूचि या झुकाव प्रदर्शित नहीं होता। मात्र अपवाद है कि यदि बृहस्पति विरोधी स्थिती अर्थात मेघ नक्षत्र में हो या सांतवी दृष्टि डालता हो तो आप एक चिकित्सक या किसी अन्य कार्य क्षेत्र में अत्यन्त ईर्ष्याजनक पद पर आसीन होंगी अर्थात आपका शैक्षिक लेखा सर्वोत्कृष्ट होगां तथा आप उच्चपद पर पहुंचेंगी.

पारिवारिक जीवन
इस नक्षत्र में जन्में पुरूषों के सर्वथा विपरीत आप स्त्री जातकों को आपने परिवार के प्रति अधिकांश समय तथ ऊर्जा समर्पित करनी पड़ती है. आपको अस्थाई रूप से अपने पति से अलग रहना पड़ेगां, यदि अन्य कल्याणकारी योग हो तो यह परिणाम नहीं होता. आपके विवाह में बाधा आ सकती हैं, या विवाह देर से होगां यदि मंगल प्रतिकूल है तो आपको प्रचुर घरेलू समस्याओं और जटिलताओं का सामना करना पड़ेगां.

स्वास्थ
आप रुयुमैटिज्म, लुम्बैगो, नितम्ब या पीठ दर्द तथा बाहं एवं कन्धे की पीड़ा की समस्यान्मुख रहेंगी.

रवि –– पूर्व भाद्रपद –– चरण –– 3
आपको अपने ससुराल पक्ष से सहायता मिलेगी. आप ऐसे कार्यव्यवसाय में होंगे, जिसमें बिक्री की वस्तु बनाने के लिए मुख्यतः जल का प्रयोग होगा. अन्य शब्दों में आप किसी पेय पदार्थ बनाने के कार्यव्यवसाय में सलग्न हो सकते हैं. यह पेय नरम या कठोर कुछ भी हो सकता है.

बुध –– सतभिषा –– चरण –– 4
यदि बुद्ध के साथ सूर्य, चन्द्र तथा बृहस्पति भी है तो धनाढ्य परिवार में जन्म लेकर भी आप धन से वंचित रह जाते हैं और राजा से रंक बन सकते हैं किन्तु यदि बुद्ध अकेला है या शनि या शुक्र के साथ है तो आप प्रचुर मात्रा में धन प्राप्त करेंगे. २३ वें तथा २८ वें वर्ष की आयु में आपको सर्तक रहना चाहिए.

शुक्र –– अश्विनी –– चरण –– 4
इस चरण में शुक्र की उपस्थिति से संगीत और अभिनय में आपकी बहुत रुचि हो सकती है, इन क्षेत्रों

में आप अच्छी योग्यता प्राप्त कर सकते हैं और अभिनेता, संगीतकार या संगीत वाद्यों के कुशल वादक बन सकते हैं, आपमें लेखन कार्य करने की भी अच्छी योग्यता हो सकती है.

मंगल –– माघ –– चरण –– 3

इस नक्षत्र में स्थित मंगल आपको रक्षा सेवाओं या एअरलाइनों में उच्चाधिकारी बनाता है. आप राजनीति से भी संबन्ध रख सकते हैं. आपको सलाह दी जाती है कि आप स्वयं की सफलता की कामना से राजनीती में न जाऐं क्योंकि अन्य क्षेत्रों में आपकी सफलता की संभावनायें बेहतर हैं.

गुरु –– माघ –– चरण –– 3

इस नक्षत्र में स्थित बृहस्पति अत्याधिक शक्तिशाली होगा भले ही कुंण्डली के अनुसार बृहस्पति नीच ग्रह में स्थित हो. अन्य कई कष्टकारी युग्म तथा दृष्टियों के साथ इस नक्षत्र में स्थित बृहस्पति समस्त कुप्रभावों को विफल कर देता है. आप सरकार में उच्च स्थान प्राप्त करेंगे तथा गवर्नर या मन्त्री या उच्च प्रशासक बन सकते हैं.

शनि –– उत्तर फाल्गुनी –– चरण –– 2

यदि आप महिला हैं और आपका शनि इस चरण में होने के साथ–साथ आपका लग्न उत्तर भाद्रपद में है तो आप अति सुन्दर होगी और आपके बाल अत्यन्त स्वस्थ्य होंगे आपकी आकृति २५ वर्ष की आयु पश्चात पूर्णतः बदल जाती है, आपका विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में होगा.

चन्द्र –– मूल –– चरण –– 3

यदि शनि, सूर्य या मंगल की दृष्टि हो तो आप एक वकील अदालत में सुलह नामा करवाने वाले तथा अदालती कार्यवाहियों को व्यसन समान प्रिय मानने वाले व्यक्ति होंगे.

राहु –– माघ –– चरण –– 2

अगर इस चरण में सिर्फ राहु स्थित है तो अवांछनीय परिणाम प्राप्त होगा. आपको ऐसे कार्यकलापों से बचना चाहिए जो आपके प्रियजनों के लिए समस्या का कारण बनें. यदि राहु बृहस्पति के साथ है या बृहस्पति की दृष्टि है तो परिणाम सुधरते हैं तथा शुभ फल प्राप्त होंगे.

केतु –– धनिष्ठा –– चरण –– 4

केतु की यह स्थिति कुछ उत्तम होगी, आप सरकारी सेवा में होंगे तथा आपका एक बच्चा विख्यात एवं धनाढ्य हो सकता है.